Education Che

# हिन्दी कविता में रहस्यवाद

## छायावाद और आधुनिक

RA
679.4
1986

Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जॉन कीट्स की उत्कृष्ट कविताओं का हिन्दी पद्यानुवाद

# Great Poems of John Keats Translated in Hindi Verse

61.8
186

अनुवादक : डॉ० कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

61.8/186 RA
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
104004

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

RA
67.H/86

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पुस्तकालय

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

104004

वर्ग संख्या..... आगत संख्या.....

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Vice-Chancellor
Gurukul Kangri University
With regards &
admiration
K K Sharma

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० धर्मपाल कुलपति द्वारा प्रदत्त पुस्तक संग्रह

# जॉन कीट्स की उत्कृष्ट कविताओं का हिन्दी पद्यानुवाद

# Great Poems of John Keats Translated in Hindi Verse

104004

अनुवादक : डॉ० कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव
आचार्य, अंग्रेजी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

**Translator : Dr. K.G. Srivastva**
Professor of English
University of Allahabad, Allahabad

पुस्तकालय
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

के० के० पब्लिकेशन्स
दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RA
69.8
786

प्रथम संस्करण, १९९७

आई०एस०बी०एन० 81-86572-95-3

**के०के० पब्लिकेशन्स**

3350, पीपल महादेव
हौज़ खास, दिल्ली--110 006
फोन : 3266965 ; फैक्स : 3269343

**भारत में प्रकाशित**

चेतना आफसेट प्रेस
ए-27/2-ए, शास्त्री गली न० 3
मौजपुर, दिल्ली--110 053

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| १. | महाकवि जॉन कीट्स : एक परिचय | १–११ |
| २. | होमर से हुए प्रथम साक्षात्कार पर | १३ |
| ३. | "स्वप्न और कविता" से | १५ |
| ४. | "एण्डीमियन" से | १७ |
| ५. | दूर हटो बर्गण्डी, क्लैरेट एवं पोर्ट | १६ |
| ६. | सन्त ऐग्निस की शाम | २१–४६ |
| ७. | आज रात मेरे हंसने का कारण क्या बतलाये कौन? | ५१ |
| ८. | "हाइपीरियन" सर्ग १ से | ५३ |
| ९. | "हाइपीरियन" सर्ग २ से | ५५–५६ |
| १०. | दयाहीन सुन्दरी | ६१–६५ |
| ११. | एक प्रगीत रति के नाम | ६७–७१ |
| १२. | प्रगीत एक बुलबुल के नाम | ७३–७६ |
| १३. | प्रगीत : एक यवन कलश पर | ८१–८५ |
| १४. | विषाद पर लिखा प्रगीत | ८५–८७ |
| १५. | "हाइपीरियन : एक स्वप्न" सर्ग १ से | ८९ |
| १६. | शरद् के प्रति | ९०–९२ |


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# महाकवि जॉन कीट्स : एक परिचय

## (1795-1821)

अट्ठारहवीं शताब्दी की रूढ़िबद्ध कविता के विरुद्ध अंग्रेजी काव्याकाश में एक क्रान्तिकारी प्रतिक्रिया हुई जिसके फलस्वरूप शताब्दी के अन्तिम चरण में एक नव्य काव्य का उदय हुआ जो 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति से प्रभावित होने के कारण समानता, बन्धुता एवं स्वतंत्रता का समर्पित भाव से पोषक था, पक्षधर था। इस नयी काव्यधारा को रोमैण्टिक अथवा रोमांसवादी काव्यधारा की संज्ञा से अभिहित किया गया। इसका पूर्ण विकास 19वीं शताब्दी के प्रथम चरण में हुआ। इस नव्य काव्य के सर्जकों को दो भागों में बांटा जा सकता है : पुराने अथवा वरिष्ठ रोमांसवादी कवि और नये अथवा कनिष्ठ रोमांसवादी कवि। यह वर्गीकरण सम्बद्ध कवियों के वयक्रम के अनुसार किया गया है। प्रथम वर्ग के कवियों में मुख्य नाम हैं : ब्लेक, वर्ड्सवर्थ, कोलरिज, स्कॉट और सौदी और द्वितीय वर्ग के अग्रणी कवि हैं : बॉयरन, शेली, कीट्स, क्लेयर और हुड।

बीसवीं शताब्दी के साहित्यिक मानदण्डों में आमूल परिवर्तन हो जाने से अपने समय में दिग्गज माने जाने वाले रोमांसवादी कवि अब विस्मृतप्राय हो गये हैं। उदाहरण के लिये सौदी का नाम लिया जा सकता है। राबर्ट सौदी अपने युग के एक अति समर्थ और अग्रगण्य कवि थे। शुरू-शुरू में शेली उनका दीवाना था किन्तु बाद में उनसे उसका मोहभंग हो गया और दोनों एक दूसरे के विरोधी बन गये। आज सौदी की चर्चा तक नहीं होती। इसी प्रकार, सर वॉल्टर स्कॉट आज अपने उपन्यासों के कारण याद किये जाते हैं, न कि अपने काव्य के कारण, यद्यपि अपने युग में वे एक श्रेष्ठ कवि के रूप में प्रतिष्ठित थे और उनकी विरुदावलियां (बैलेड्स) ब्रिटेन में घर घर गायी जाती थीं। यहां तक कि वड्र्सवर्थ, कोलरिज और शेली जैसे महाकवियों पर भी आज प्रायः प्रश्नचिह्न लग जाते हैं। किन्तु रोमांसवादी अंग्रेजी कवियों में एक नाम ऐसा भी है जो आधुनिक काव्यशास्त्रीय निकष पर खरा उतरा है। वह नाम है जॉन कीट्स जिसकी ख्याति निरन्तर बढ़ती जा रही है। रानी विक्टोरिया के युग से आज तक अभिरुचियों में आये दिन होने वाले परिवर्तनों के बावजूद कीट्स की काव्य-प्रतिभा को सभी खेमे के आलोचकों ने सराहा है चाहे वे मिडिल्टन मरे सरीखे व्यक्तिवादी समीक्षक हों या एफ० आर० लीविस जैसे विषयनिष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



निर्णायक जो आधुनिक कला को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं और रोमांसवादी काव्य की आलोचना करते नहीं थकते। अपने समय में ही उदीयमान कवि होने के बावजूद उदारवादी प्रवृत्तियों के पोषक आलोचकों में कीट्स की अच्छी खासी धाक जम गई थी। कवि शेली का शोक–गीत 'एडोनेस' इसका ज्वलन्त प्रमाण है। उस समय के एक अन्य कवि और आलोचक ले हण्ट ने (जो कीट्स का वरिष्ठ मार्गदर्शक था) अपने कनिष्ठ सहयोगी की काव्य–प्रतिभा को पहचाना था और उसकी प्रशस्ति में काफी कुछ लिखा था। यहां तक कि वरिष्ठ कवि वर्ड्सवर्थ ने भी, जो एक महान् समीक्षक भी थे, कीट्स के परम प्रशंसक थे। अपने और कीट्स दोनों के सामान्य मित्र हेडन को सम्बोधित एक पत्र में वर्ड्सवर्थ ने कीट्स की कविता 'ग्रेट स्पिरिट्स नाऊ ऑन अर्थ आर सोजर्निंग' की प्रशंसा करते हुए कहा है कि कीट्स सुन्दर सम्भावनाओं से पूर्ण है। महारानी विक्टोरिया के युग में तो कीट्स काव्य का पर्याय ही बन गये थे। उस युग के सर्वप्रिय कवि टेनिसन मानों कीट्स के अवतार ही थे— उनके काव्य पर कीट्स की स्पष्ट छाप है। प्री–रैफेलाइट ब्रदरहुड वाले प्रायः सभी कवि—राज़िटी, स्विनबर्न, मारिस आदि–कीट्स–काव्य से अनुप्राणित थे। उस युग के मूर्धन्य समीक्षक और सफल कवि मैथ्यू आर्नल्ड ने तो कीट्स को 'दूसरा शेक्सपियर' तक कह डाला था। आर्नल्ड के खुद के काव्य की पदशैय्या पग पग पर कीट्स की याद दिलाती है। 'सोहराब ऐण्ड रोस्तम' और 'स्कालर जिप्सी' पढ़ते समय कीट्स के ओड्स तुरन्त याद आ जाते हैं। 20वीं शती के कवि भी कीट्स के प्रभाव से बच नही सके हैं। राबर्ट ब्रिजेज़, हॉपकिंस, हार्डी एवं येट्स सभी कीट्स के मानस पुत्र प्रतीत होते हैं। सभी आधुनिक समीक्षकों ने कीट्स की भूरि–भूरि प्रशंसा की है क्योंकि वह आधुनिक काव्य–शास्त्रीय निकष पर खरा उतरा है। वह आज भी पूर्ण रूप से प्रासंगिक है। मेरा तो अटल विश्वास है कि कीट्स सार्वभौमिक एवं सार्वजनीन हैं; वह भौगोलिक सीमाओं से परे हैं, कालातीत हैं। आधुनिक भारतीय भाषाओं, विशेषतः हिन्दी के कवि कीट्स, से बहुत कुछ सीख सकते हैं। हिन्दी के अनेक कवियों ने कीट्स से प्रेरणा ली है। उदाहरणार्थ, कविवर सुमित्रानन्दन पन्त एवं हरिवंश राय 'बच्चन' आधुनिक युग के ऐसे कवि हैं जिनपर कीट्स की छाप स्पष्ट है। सन् 1995 कीट्स के जन्म का द्वितीय शताब्दी वर्ष था जब संसार के प्रायः सभी देशों ने इस महान् कवि को श्रद्धावनत हो याद किया और अपनी पूजा–पुष्पांजलि उसे अर्पित की। प्रस्तुत संग्रह भी ऐसा ही एक अभिनन्दन है जिसका प्रयोजन हिन्दी भाषा–भाषी काव्य–प्रेमियों तक जॉन कीट्स की कविता को हिन्दी के माध्यम से पहुंचाना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कीट्स का जन्म 31 अक्टूबर 1795 को लण्डन शहर के मूरफील्ड्स क्षेत्र में फिन्सबरी नामक बस्ती में टॉमस कीट्स नामक एक अस्तबल के स्वामी के घर हुआ था। अपने मां–बाप के चार बच्चों में कीट्स प्रथम था। जब वह आठ साल का ही था, उसके पिता की मृत्यु घोड़सवारी करते समय हुई और जब वह चौदह वर्ष का हुआ, उसकी मां फ्रैंसिस अपने बच्चों को अनाथ छोड़ राजयक्ष्मावश स्वर्ग सिधार गई। बच्चों को संरक्षक के रूप में मिले रिचर्ड ऐब्बे साहब जिन्होंने सोचा कि क्यों न बड़े बच्चे कीट्स को कुछ कमाने–धमाने लायक बना लिया जाय। अस्तु, उन्होंने टामस कीट्स की मृत्यु के एक वर्ष के भीतर ही एक सर्जन टामस हेमण्ड के यहां, जो वास्तव में एक भैषज्य (एपाथोकैरी) था, कीट्स को अपरेंटिस (अवैतनिक सेवक) बनवा दिया। सन् 1815 में कीट्स गाइस हास्पिटल में ड्रेसर के पद पर नियुक्त हुआ। किन्तु काव्य के प्रति उसकी ललक इतनी प्रबल थी कि उसने अपने को सम्पूर्ण रूप से काव्य को समर्पित कर दिया। यह एक महती विलक्षण लीला ही कही जायेगी कि अश्व–सेवकों के कुल में, जहां साहित्यिक संस्कार की कथमपि कल्पना नहीं की जा सकती और जहां पढ़ने–लिखने की कोई परम्परा ही नहीं थी, कीट्स जैसा प्रतिभा–सम्पन्न कवि उत्पन्न हुआ। ध्यातव्य है कि कीट्स की मां एक अस्तबल चलाने वाले की बेटी थी और उसने अपने पिता के वरिष्ठ सईस से अपना ब्याह रचाया था। इस प्रकार न तो उसके पिता के वंश में और न ही मां के कुल में काव्य के प्रति कभी भी किसी प्रकार की अभिरुचि थी। कीट्स की पढ़ाई–लिखाई भी कोई खास नहीं हो सकी थी। एनफील्ड स्थित रेवरेण्ड जॉन क्लार्क नामक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् द्वारा संचालित एक स्कूल में उसकी सारी पढ़ाई 1803-11 के बीच हुई थी। चूंकि 1804 में पिता की मृत्यु होते ही मां ने विलियम रालिंस से अपनी दूसरी शादी रचा ली थी, इसलिए दादी श्रीमती एलिस जेनिंग्ज़ एवं दादा जॉन जेनिंग्ज़ के ऊपर उसकी पढ़ाई–लिखाई एवं लालन–पालन का दायित्व आ पड़ा था। नाना जॉन जेनिंग्ज़ 1805 में स्वर्ग सिधार गये। तत्पश्चात् दादी एलिस को ही अकेले कीट्स और उसके दो भाइयों जार्ज और टाम तथा बहन फ्रैंसिस मैरी के भरण–पोषण का गुरुतर भार उठाना पड़ा। (कीट्स के एक अन्य भाई एडवर्ड की मृत्यु शैशवावस्था में ही हो गयी थी।) दादा–दादी पहले एनफील्ड में रहते थे। पर दादाजी की मृत्यु के पश्चात् दादीजी सभी पोतों एवं पोती के साथ एडमाण्टन चली आईं। 1810 ई० में कीट्स की माताजी का देहावसान राजयक्ष्मा से हो गया। कीट्स ने उनकी बीमारी में उनकी बड़ी सेवा की थी। उसी साल दादी एलिस ने जॉन नोलैण्ड सैण्डाल एवं रिचर्ड ऐबे नामक दो सम्बन्धियों को बच्चों का संरक्षक नियुक्त कर दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सैण्डाल के 1816 में ही दिवंगत हो जाने पर ऐबे अकेला संरक्षक रह गया था। दादी एलिस तो 1814 में ही स्वर्ग सिधार गई थीं।

रेवरेण्ड जॉन क्लार्क की पाठशाला में प्रवेश लेने के पश्चात् ही कीट्स की काव्य–प्रतिभा प्रकट होने लगी। वहाँ शिक्षा ग्रहण करते समय ही उसने लैटिन भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि वर्जिल के महाकाव्य 'एनीड' का अनुवाद करना शुरू कर दिया था और 1811 में पाठशाला छोड़ते छोड़ते उसने समूचे महाकाव्य का अनुवाद कर लिया था। जॉन क्लार्क की एनफील्ड स्थित पाठशाला में बिताया गया समय कीट्स के लिए वरदान सिद्ध हुआ। यहीं गुरु–पुत्र चार्ल्स काउडेन क्लार्क से उसकी मैत्री हुई जो उसके लिए बड़ी लाभकारी रही; इस मैत्री ने ही कीट्स के अन्दर छिपी हुई काव्य–प्रतिभा को प्रस्फुटित किया। गुरु–पुत्र की ही कृपा का परिणाम था कि जॉन क्लार्क की अति समृद्ध ग्रन्थावली कीट्स को सहज सुलभ हो गई। कवि का अधिकांश समय क्लार्क के ग्रन्थागार में ही बीतता था। 'एनीड' महाकाव्य का दर्शन उसे यहीं हुआ था और यहीं अंग्रेजी के महाकवि स्पेंसर के काव्यों और चैपमन द्वारा अनूदित होमर–विरचित महाकाव्यों 'इलियड' और 'ओडिसी' का पारायण भी उसने किया।

कीट्स अपने भाइयों एवं बहन फैनी (फ्रैंसिस मैरी कीट्स) को अत्यधिक प्यार करता था। टॉम कीट्स को राजयक्ष्मा ने धर दबोचा था और उसी से उस बेचारे का प्राणान्त भी हुआ था। कवि ने अपने अनुज की बड़ी देख–भाल की थी। दूसरे कनिष्ठ भ्राता जार्ज कीट्स और उसकी पत्नी जार्जियाना कीट्स दोनों को कवि कीट्स का अतुलनीय स्नेह मिला था। जब वे दोनों धन कमाने की लालसा से अमेरिका चले गये थे, कीट्स उन्हें निरन्तर पत्र लिखता रहता था। ये पत्र अत्यन्त स्नेहसिक्त हैं। सहृदय पाठक उन्हें पढ़कर कीट्स के भ्रातृ–प्रेम से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। फैनी कीट्स को लिखे गये कवि के पत्र उसके बहन के प्रति अगाध प्रेम को व्यक्त करते हैं। कीट्स की मातृभक्ति का परिचय तो इसी बात से मिल जाता है कि यद्यपि पति की मृत्यु से डेढ़ महीने के भीतर ही मां ने विलियम रौलिंग्ज़ से अपना दूसरा ब्याह रचा लिया था, तथापि जब मां राजयक्ष्मा से पीड़ित हो तड़प रही थी तब बेटे कीट्स ने उसकी बड़ी निष्ठा और लगन से सेवा की थी। दूसरा कोई लड़का ऐसी निर्मोही मां का पूर्णरूप से परित्याग कर देता और उसकी सेवा–टहल तो कदापि न करता।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जॉन कीट्स एक उदात्त सामाजिक प्राणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



था जो अन्तर्मुखी होकर नित्य अपनी कविता में ही नहीं खोया रहता था अपितु सामाजिक दायित्वों को बखूबी निभाता था। उसका चरित्र निष्कलंक और प्रशंसनीय था। निष्ठा, त्याग, प्रेम एवं परोपकार इन सभी दिव्य गुणों से वह सम्पन्न था। वह कोरा कवि न होकर सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करने वाला समाजधर्मा, नैतिकता के उच्च आदर्शों का पालन करने वाला श्लाघ्य मानव था।

अब हम उसके सृजनात्मक जीवन का लेखा–जोखा आसानी से कर सकते हैं। कीट्स की काव्य–सर्जना की शुरुआत होती है 1814 में जब उसने "इमिटेशन आव् स्पेंसर" शीर्षक कविता लिखी। किन्तु, उसकी प्रथम प्रकाशित रचना थी "ओ सालीचूड" शीर्षक कविता जिसकी सर्जना कीट्स ने 5 मई 1816 को की थी। उस युग के मूर्धन्य पत्रकार और लेखक ले हण्ट ने अपनी पत्रिका "इग्ज़ैमिनर" में इसे प्रकाशित किया था। इसी वर्ष की एक उत्कृष्ट रचना थी एक चतुर्दशपदी (सानेट) जिसका शीर्षक था "ऑन फर्स्ट लुकिंग इन्टू चैपमन्स होमर"। यह कविता भी पहली बार ले हण्ट की पत्रिका "इग्ज़ैमिनर" में दिसम्बर 1816 में छपी थी। इस रचना में कीट्स की काव्यात्मक परिपक्वता स्पष्ट झलकती है। सन् 1816 के दिसम्बर में कीट्स ने अपनी प्रथम सुदीर्घ और कलात्मक दृष्टि से परिपक्व कविता "स्लीप ऐण्ड पोइट्री" पूर्ण की। इस कविता में कीट्स ने अपने काव्य–सम्बन्धी सिद्धान्तों को बड़े स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है और अंग्रेजी कविता की ऐतिहासिक रूप–रेखा प्रस्तुत करते हुए उसकी समीक्षा भी की है। अगले वर्ष (अर्थात् 1817 ई० में) सी० ऐण्ड जे० ओलियर नामक ग्रन्थों का प्रकाशन करने वाली कम्पनी ने कीट्स के प्रथम काव्य–संग्रह को प्रकाशित किया जिसमें अनेक अन्य कविताओं के साथ उपरि–निर्दिष्ट सभी कविताएं संकलित थीं। इस संग्रह के छपने के लगभग एक महीने के बाद ही कवि ने अपने प्रबन्ध–काव्य "एण्डीमियन" को लिखना शुरू कर दिया था। इस प्रबन्ध के कुल चार खण्डों में से प्रथम दो खण्ड 21 अगस्त 1817 तक पूरे हो गये थे। 5 अक्टूबर 1817 तक तीसरा खण्ड भी पूरा हो गया था। 28 नवम्बर 1817 तक चतुर्थ खण्ड के पूर्ण होने के साथ पूरा प्रबन्ध काव्य तैयार हो गया। इस काव्य में चन्द्रमा की देवी सिन्थिया की क्रीटी–स्थित लैटमस पर्वत पर रहने वाले एण्डीमियन नामक पशुपालक नवयुवक के प्रति दीवाने प्रेम की ग्रीक गाथा बड़े ही चित्रात्मक शैली में निबद्ध है। आधुनिक समीक्षकों ने इसे कीट्स के काव्य–सम्बन्धी अपने सिद्धान्तों पर आधारित एक सफल प्रतीकात्मक काव्य कहा है जबकि कीट्स के समकालीन आलोचकों ने इसकी बड़ी खिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उड़ाई थी। पुरातनता के उपासक लॉकहार्ट सरीखे आलोचकों ने, जिनकी भक्ति उस समय की सत्ताधारी टोरी दल के प्रति थी, "ब्लैकवुड्स" नामक पत्रिका के माध्यम से कवि को प्लास्टर, गोली, मलहम इत्यादि तत्त्वों के पास वापस लौटने की सलाह दी क्योंकि उनकी दृष्टि में कीट्स में कविता–लेखन के कोई लक्षण नहीं थे। यह आलोचना दुर्भावनाग्रस्त थी और कदापि न्यायसंगत नहीं थी। इसके पीछे थी कीट्स की ले हण्ट के साथ मैत्री, मैत्री उस व्यक्ति के साथ जो स्वतंत्रता का हिमायती था और था स्वतंत्रता के प्रति पूर्णरूप से समर्पित। फिर कीट्स ने तो आजादी के दीवाने ले हण्ट के जेल से छूटने पर 2 फरवरी 1815 को एक चतुर्दशपदी ('सॉनेट') लिखा था जिसका शीर्षक था "रिटेन ऑन द डे दैट मिस्टर ले हण्ट लेफ्ट प्रिज़न"। यह कविता छपी थी 1817 में। अगले ही साल 27 अप्रैल 1818 को जब कीट्स का प्रबन्ध काव्य "एण्डीमियन" प्रकाशित हुआ तब पुरातनपंथी और ले हण्ट–विरोधी समीक्षकों ने ले हण्ट के पक्ष में उपरि–निर्दिष्ट चतुर्दशपदी लिखने के दण्ड–स्वरूप कीट्स की बड़ी आलोचना की। टोरी दल का समर्थन करने वाली लण्डन की दोनों शीर्षस्थ पत्रिकाओं–"ब्लैकवुड्स एडिम्बरा मैगज़ीन" और "क्वार्टर्ली रिव्यू"–में कीट्स–विरोधी अनेक लेख प्रकाशित हुए। पहली पत्रिका के अगस्त 1818 वाले अंक में जॉन गिब्सन लॉकहार्ट ने और दूसरी के सितम्बर 1818 वाले अंक में जॉन विल्सन क्रोकर ने "एण्डीमियन" की बड़ी तीखी आलोचनाएं छापीं। कुछ लोगों ने इस प्रकरण के आधार पर यह कथा गढ़ ली कि कीट्स की असामयिक मृत्यु इन्हीं कटु आलोचनाओं का परिणाम थी। लार्ड वॉयरन इस कथा को प्रचारित करने में सबसे आगे थे। किन्तु वस्तु–स्थिति यह थी कि कीट्स इन दुष्प्रचारात्मक और दुर्भावनाग्रस्त आलोचनाओं से पूर्णतः अप्रभावित था। वह तो स्वयं अपना सबसे बड़ा आलोचक था। कविता की प्रस्तावना में कीट्स ने "एण्डीमियन" को "एक प्रयास मात्र" कहा है। कवि को इस बात का पूरा एहसास है कि उसकी कविता में अनुभव की कमी है और वह अपरिपक्व है–वह एक ऐसे कवि की कल्पना की प्रसूति है जो बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का है अर्थात् किशोर है। कीट्स उक्त दुरालोचनाओं से अप्रभावित था। इस बात का प्रमाण यह है कि कीट्स ने 1818 और 1820 के दो वर्षों की अवधि में दुगने उत्साह से काव्यसर्जना की। यह काल–खण्ड उसके लिए सर्वाधिक उपयोगी और फलवान् था और व्यक्तिगत रूप से दुःखदायी भी। 22 जून 1818 को उसने छोटे भाई जार्ज और उसकी पत्नी जार्जियाना को लिवरपूल से अमेरिका के लिए विदा किया; 18 अगस्त 1818 को उसे पता चला कि उसके सबसे छोटे भाई टॉम को राजयक्ष्मा है और उसी दिन उसे बड़ी तेज ठण्ड लग गई और उसका गला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बुरी तरह खराब हो गया। इसके परिणामस्वरूप स्काटलैण्ड की सुनियोजित यात्रा बीच ही में रद्द कर देनी पड़ी। 27 सितम्बर 1818 को क्रोकर महोदय की दुर्भावनापूर्ण आलोचना "क्वार्टर्ली रिव्यू" में छपी थी और कीट्स टाम की सेवा–सुश्रूषा में लीन रहा था। इस सबके बावजूद उसने ग्रीक पुराण–कथा पर आधृत "हाइपीरियन" शीर्षक महाकाव्य उसी दिन लिखना प्रारम्भ कर दिया था क्रोकर महोदय की आलोचना से बिना मर्माहत हुए। वह सचमुच एक कर्मयोगी कवि था जो प्राणघातक बीमारी से पीड़ित भाई की सेवा मनोयोगपूर्वक कर रहा था और साथ ही गुरु–गम्भीर काव्य–सर्जना भी। इसी बीच उसके प्रणय व्यापार भी चलते रहे। श्रीमती इसाबेला जोंस उसकी पहली प्रेमिका थी। इस महिला से उसकी पहली भेंट 1817 में मई के अंत या जून के प्रारम्भ में हुई थी। उसकी दूसरी प्रेमिका थी एक फ्रांसीसी बाला जिसका नाम था फैनी ब्रान। कीट्स से फैनी ब्रान की पहली मुलाकात 1818 के सितम्बर के अन्त में हुई थी। इस समय कवि अपने मित्र ले हण्ट के घर पर रह रहा था। पहली दिसम्बर 1818 को टॉम कीट्स की मृत्यु हो गयी जो कीट्स के लिए नितान्त असह्य थी। एक दिन ले हण्ट के किसी नौकर ने कीट्स के व्यक्तिगत पत्र को खोलकर पढ़ लिया था जिससे नाराज होकर कवि ने ले हण्ट के आवास मार्टिमर टेरेस का परित्याग कर दिया और वह हैम्पस्टेड स्थित वेण्टवर्थ प्लेस नामक भवन में अपने मित्र ब्राउन के यहां रहने लगा। वेण्टवर्थ प्लेस भवनों का एक समुच्चय है। इसमें एक भवन फैनी ब्रान की मां का था जिसमें वह अपने एक पुत्र और दो पुत्रियों फैनी और मारगरेट के साथ रहती थी; इस भवन का एक भाग उसने किराये पर ब्राउन को दे रखा था। इस तरह कीट्स और फैनी ब्रान एक ही भवन के दो भागों में अलग–अलग रहने वाले पड़ोसी हो गये। 25 दिसम्बर 1818 को कीट्स और फैनी ब्रान की सगाई भी हो गई थी। श्रीमती ब्रान अर्थात् फैनी ब्रान की माँ ने कवि की उसके गले की भयंकर बीमारी के दौरान बड़ी सेवा–टहल भी की थी। यह गले वाली बीमारी ही बाद में राजयक्ष्मा में बदल गई। 3 फरवरी 1820 को इस बीमारी का मारक स्वरूप कीट्स को परिलक्षित हो गया; सुतरां 13 फरवरी 1820 को कवि ने फैनी ब्रान से सगाई तोड़ने का प्रस्ताव किया किन्तु फैनी ब्रान ने इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। 5 जुलाई 1820 को कीट्सके डाक्टर ने सुझाव दिया कि वह स्वास्थ्यलाभ के लिए इटली चला जाय। कवि के संरक्षक रिचर्ड ऐबे ने इटली–यात्रा पर खर्च होने वाली धनराशि देने से इंकार कर दिया जबकि नियमतः उसे यह राशि तुरन्त दे देनी चाहिए थी। खैर, कीट्स के मित्रों ने पैसों का प्रबन्ध कर दिया और कवि अपने मित्र सेवर्न के साथ इटली की यात्रा पर समुद्र मार्ग से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



29 सितम्बर 1820 को चल पड़ा। 15 नवम्बर 1820 को रोम पहुंच कर पिजा डि स्पाग्ना में उसने सेवर्न के साथ एक लाज में रहना शुरू कर दिया। किन्तु रोम में रहकर भी वह स्वस्थ नहीं हो सका और अन्ततोगत्वा 23 फरवरी 1821 को रात्रि के ग्यारह बजे भगवान् को प्यारा हो गया। किन्तु आखिरी समय तक उसकी सर्जना–शक्ति अक्षुण्ण थी। कीट्स की मृत्यु का समाचार सुन कर अंग्रेजी कवि शेली ने, जो उन दिनों इटली में ही रह रहा था, "एडोनेस" शीर्षक करुण गीत (एलिजी) लिखी जिसमें कीट्स की प्रतिभा की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की गई है।

जैसा मैंने ऊपर के परिच्छेदों में कहा है, 1818 और 1820 के बीच का काल कीट्स के कवि–कर्म के लिए बहुत शुभ था। उसकी उत्कृष्ट और अमर रचनाएं इसी अवधि में लिखी गई थीं। टॉम कीट्स की बीमारी के समय उसकी तीमारदारी करते हुए कवि ने "हाइपीरियन" शीर्षक महाकाव्य लिखना शुरू कर दिया था। यदि यह काव्य पूरा हो गया होता तो मिल्टन के "पैराडाइज़ लास्ट" के बाद वह अंग्रेजी भाषा का दूसरा सफल महाकाव्य होता। किन्तु दुर्भाग्यवश तीसरे सर्ग के बीच में ही कीट्स को अपनी महती योजना का परित्याग कर देना पड़ा। 'कीट्स क्यों इस काव्य को पूर्ण नहीं कर सका' यह प्रश्न अद्यादधि विवादास्पद बना हुआ है और अनुत्तरित है। अधिकांश विद्वानों का अनुमान है कि मिल्टन की उदात्त शैली (ग्रैण्ड स्टाइल) कीट्स की प्रतिभा के अनुकूल नहीं थी; इसलिए जब उसने देखा कि उसका अनुपालन कर उसकी प्रतिभा कुण्ठित हो रही है तो उसने अपने काव्य को अधूरा छोड़ दिया। किन्तु क्या यही बात कवि के दूसरे प्रयास पर भी लागू होती है जिसमें उसी ग्रीक वृत्त को उसने स्वप्न के आवरण में नये ढ़ंग से पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया ? इस दूसरे प्रयास का शीर्षक था "द फॉल ऑव हाइपीरियनः अ ड्रीम"। इस कृति को कीट्स ने 1819 की जुलाई के मध्य में शुरू किया जब वह कुछ दिनों के लिए आइल ऑव वाइट गया हुआ था। किन्तु 21 दिसम्बर 1819 को उसने इस रचना को भी अपूर्ण छोड़ दिया। दूसरे सर्ग की इकसठवीं पंक्ति पर ही कवि की लेखनी जड़ हो गई। कदाचित् कवि का अस्वास्थ्य महाकाव्य–लेखन के लिए अपेक्षित अविरत और अजस्र श्रम की आज्ञा नहीं दे पा रहा था। हां, लघु काव्यों के प्रणयन में कीट्स ने किसी बाधा का सामना नहीं किया, उसकी लेखनी इन रचनाओं के प्रणयन में अबाधगति से चलती रही। फिर भी हाइपीरियन (सूर्यदेव) की कथा पर आधारित दोनों रचनाएं :'हाइपीरियन : अ फ्रैगमेण्ट' और 'द फाल ऑव हाइपीरियन : अ ड्रीम' काव्य–कला की दृष्टि से बेजोड़ हैं। दोनों कविताओं के जो भी अंश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हमें उपलब्ध हैं, कीट्स की उदात्त काव्य–शैली के जीवन्त प्रमाण हैं। पहली रचना मिल्टन के "पैराडाइज़ लास्ट" के बिल्कुल समकक्ष है और दूसरी रचना इटली के महाकवि दान्ते की अमर कृति महाकाव्य "डिवाइना कमेडिया" की बरबस याद दिलाती है।

किन्तु कीट्स की जो धाक अंग्रेजी कविता के इतिहास में आज तक जमी हुई है उसका आधार है कवि की अपेक्षाकृत लघु कविताएं जो प्रायः सभी 1818 और 1820 के बीच लिखी गयी थीं और वे सभी सर्वथा पूर्ण हैं। 27 अप्रैल 1818 को टेलर और हेस नामक प्रकाशन संस्था ने कवि की "एण्डीमियन" को प्रकाशित किया और ठीक उसी दिन कवि ने "इसाबेला; ऑर, द पॉट ऑव बेसिल" शीर्षक काव्य–कथा पूरी कर ली थी। "आटवा रीमा" नामक इटैलियन छन्द में प्रणीत यह रचना इटली के मध्ययुगीन कवि बकैचियों के कहानी–संग्रह "डिकैमेरान" के चौथे दिन की पांचवीं कथा पर आधारित है। इसमें फ्लोरेंस नगर की एक कुलीन नारी इसाबेला और उसकी अपेक्षा निम्न सामाजिक स्तर के युवक लारेन्जो की दुःखमयी प्रेम–कथा वर्णित है। इसाबेला के घमण्डी भाई लारेन्जो को बलपूर्वक दूर ले जाकर उसकी हत्या कर देते हैं और लाश को एक जंगल में छिपा देते हैं। दैवी प्रेरणा से इसाबेला अपने प्रेमी की लाश ढूंढ़ लेती है और उसके शिर को एक बर्तन में रखकर ऊपर से बेसिल (अर्थात् तुलसी) का पौधा लगा देती है। भाई लोग उस बर्तन को चुरा ले जाते हैं। जब वे देखते हैं कि उसमें लारेन्जो का शिर रखा हुआ है तब वे ग्लानि से भरकर घर से भाग जाते हैं और इसाबेला रो रोकर अपनी जान दे देती है। अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार चार्ल्स लैम, जो कीट्स के वरिष्ठ समकालीन लेखक थे, कवि की इस कविता के बहुत बड़े प्रशंसक थे। उन्होंने इसे 'द फाइनेस्ट थिंग इन द वर्ल्ड' अर्थात् 'संसार की सर्वोत्कृष्ट वस्तु' कहा था। 1819 की जनवरी में कवि ने एक अन्य काव्य–कथा "द ईव ऑव् सेण्ट ऐग्निस" लिखी। यह एक सफल प्रेम–गाथा है। इसमें दो दुश्मन खानदानों के युगल प्रेमी हृदयों का सफल मिलन वर्णित है अत्यन्त चित्रात्मक और संश्लिष्ट शैली में। 13 से 17 फरवरी 1819 में लिखी कविता 'द ईव ऑव सेण्ट मार्क' का हम यहां उल्लेख नहीं करना चाहते हैं क्योंकि यह कविता अपूर्ण है यद्यपि यह "ईव ऑव सेण्ट ऐग्निस" की भांति अत्यन्त चित्रात्मक है और इंग्लैण्ड की मध्ययुगीन संस्कृति का साक्षात् दर्शन कराने में पूर्ण समर्थ है। 1819 में अप्रैल और मई के बीच किसी समय कीट्स ने अपना प्रसिद्ध "बैलेड" लिखा जिसका शीर्षक है : "ल बेल दाम सँ मेक्षी" (दयाहीन सुन्दरी बाला")। यह कविता प्रतीकविधान और अप्रस्तुतयोजना के मामले में बेजोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है। संकेताथता आर ध्वन्यार्थमयता की भी दृष्टि से यह रचना अति उत्कृष्ट है। इसकी अनेक व्याख्याएं की गई हैं। इसी अवधि में कवि ने अपनी सर्वोत्तम काव्यनिधि अर्थात् अपने प्रगीतों (ओड्स) का सृजन किया : "ओड टु साइके", "ओड टु इण्डोलेंस", "ओड टु अ नाइटिंगेल" और "ओड ऑन अ ग्रीशन अर्न"। आधुनिक समालोचकों के मतानुसार "टु आटम" शीर्षक प्रगीत कीट्स के सभी प्रगीतों में संरचना एवं भाव–दोनों ही दृष्टियों से श्रेष्ठ है यद्यपि प्रकृत लेखक की दृष्टि से 'ओड टु अ नाइटिंगेल' कीट्स की सर्वोत्तम कृति है।

28 जून 1819 ई० और 5 सितम्बर 1819 के बीच कवि ने एक प्रच्छन्न नागबाला को आधार बनाकर दो खण्डों वाली काव्य–कथा "लैमिया" की रचना की। यह कविता अपनी प्रतीकार्थता के लिए बहुत प्रसिद्ध है। 1819 में लिखी अन्य रचनाओं में सर्वथा प्रशंसनीय रचना थी एक काव्य–नाटिका जिसका शीर्षक है "आथो द ग्रेट"। पांच अंकों में लिखी यह एक दुःखान्त नाटिका है जो दसवी शती के हंगरी देश के राजा आथो के विरुद्ध उसी के पुत्र लुडोल्फ और उसके साले लारेन के ड्यूक कानरैड द्वारा किए गये असफल विद्रोह (953-4) पर आधारित है। इस नाटिका की सृष्टि में कीट्स के मित्र चार्ल्स ब्राउन की भी सहभागिता थी यद्यपि सारी की सारी अभिव्यक्ति कीट्स की है। महारानी एलिजाबेथ के युग के त्रासदी लिखने वालों की कोटि में अपने को परिगणित करवाना ही इस नाटिका की रचना के पीछे कवि का प्रबल मनोरथ था। इस कृति ने सिद्ध कर दिया कि कीट्स नाटक–प्रणयन के लिए अपेक्षित नितान्त निर्वैयक्तिकता को अधिगत करने में पूर्ण समर्थ है।

1820 का वर्ष कीट्स की पूर्व–प्रणीत रचनाओं के प्रकाशन का वर्ष था। वैसे इस वर्ष भी कवि ने कुछ छोटी–मोटी कविताएं लिखीं अवश्य। इन रचनाओं में सबसे प्रसिद्ध और उल्लेख्य रचना थी "ब्राइट स्टार" शीर्षक सानेट। 1820 में कवि की कविताओं का एक बृहद् संग्रह प्रकाशित हुआ था जिसमें "लैमिया", "इसाबेला", प्रायः सभी प्रगीत और "हाइपीरियनःअ फ्रैगमेण्ट" सम्मिलित थे।

कवि कीट्स की ख्याति उसके काव्य में संकेतित ऐन्द्रिकता (सेन्सुअसनेस) और उसके सौन्दर्य–प्रेम के लिए रही है। उसके काव्य के इस पक्ष में कवि की चित्रविधायिनी शक्ति अन्तर्भुक्त है। मध्ययुगीन अंग्रेजी वातावरण की सृष्टि (मेडीवलिज़्म) और अपने यूनानीपन ("हेलेनिज़्म") के लिए भी कीट्स काफी चर्चित रहा है। किन्तु आज का पाठक जो उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



काव्य पर अत्यन्त मुग्ध है उसका कारण है कीट्स की निर्वैयक्तिकता जिसे उसने स्वयं 'निगेटिव केपेबिलिटी' का अभिधान दिया था। यह वह काव्य–गुण है जो कवि को परम योगी बना देता है जब वह अपने अहंकार को भूलकर वर्ण्य विषय से पूर्ण तादात्म्य स्थापित कर लेता है बिना किसी लगाव विशेष के, पूर्ण निर्लिप्त भाव से, पूर्ण स्थितप्रज्ञता के साथ। कीट्स की दृष्टि में यह काव्य–गुण महाकवि शेक्सपियर में सबसे अधिक विद्यमान था क्योंकि जिस भाव से उसने कार्डेलिया के चरित्र का निर्माण किया उसी भाव से रीगन और गानरिल का भी। छोटे–बड़े, ऊंच–नीच, सज्जन–दुर्जन आदि द्वन्द्वों से ऊपर उठकर जब पूरी लगन और निष्ठा के साथ कोई कवि अपने काव्य का सृजन करता है तब समझ लेना चाहिए कि उसमें 'निगेटिव केपेबिलिटी' आ गई है। कीट्स इसी काव्य–गुण को प्राप्त करने में लगा हुआ था और उसने इसे करीब–करीब पा ही लिया था जब वह अकाल काल–कवलित हो गया। यदि वह कुछ वर्ष और जी गया होता तो, जैसा मैथ्यू आर्नल्ड का कथन है, वह दूसरा शेक्सपियर हो जाता।

कीट्स के जन्म के द्विशताब्दी वर्ष के अवसर पर मैंने इस महा कवि की अति उत्कृष्ट रचनाओं को हिन्दी छन्द में अनूदित कर हिन्दी काव्य जगत् को इस महान् अंग्रेजी कवि की कविता से परिचित कराने का प्रयास किया है; इसी प्रयास के ब्याज से मैं इस महान् आत्मा को अपना श्रद्धा–सुमन अर्पित करता हूँ। इस संग्रह में "ओड टू अ नाइटिंगेल", "ओड आन अ ग्रीशन अर्न", "ओड टु मेलड्.कली", ओड टु साइके", "टु आटम", "द ईव आव सेण्ट ऐग्निस", "ल बेल दाम सँ मेक्षी" और "आन फर्स्ट लुकिंग इण्टू चैपमंस होमर" सम्पूर्ण रूप से अनूदित हैं तथा "स्लीप ऐण्ड पोइट्री", "एण्डीमियन", "हाइपीरियन : अ फ्रैग्मेण्ट" और "द फॉल आव हाइपीरियन अः ड्रीम" के कुछ अंश रूपान्तरित हैं। "हेंस बर्गण्डी, क्लैरेट एण्ड पोर्ट" शीषर्क कविता भी यहाँ अनूदित है क्योंकि इसमें कवि का मस्त मौला रूप निखरकर सामने आ गया है और कवि के उस पक्ष का परिचय मुझे अनिवार्य सा प्रतीत होता है। अनुवाद सफल हुआ है या असफल इसका निर्णय तो सुधी पाठक ही करेंगे। यहाँ प्रस्तुत रचनाएँ काल क्रम से संकलित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## On First Looking into Chapman's Homer

Much have I travelled in the realms of gold
And many goodly states and kingdoms seen;
Round many western islands have I been
Which bards in fealty to Apollo hold.
Oft of one wide expanse had I been told
That deep-browed Homer ruled as his demesne,
Yet did I never breathe its pure serene
Till I heard Chapman speak out loud and bold:
Then felt I like some watcher of the spies
When a new planet swims into his ken;
Or like stout Cortez when with eagle eyes
He stared at the Pacific-and all his men
Looked at each other with a wild surmise—
Silent, upon a peak in Darien.

(October, 1816)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# होमर से हुए प्रथम साक्षात्कार पर

(अंग्रेजी कविता में 'सानेट' (चौदह पंक्तियों की कविता) अथवा चतुष्पदी लिखने की समृद्ध परम्परा रही है। कीट्स ने भी अनेक चतुष्पदियाँ लिखीं। प्रस्तुत चतुष्पदी उनमें सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।)

देशाटन कर चुका बहुत हूँ स्वर्णिम भूभागों में,
देखे मैंने कई राज्य अरु रजवाड़े जगती पर,
लगा लिए हैं मैंने बहुशः पश्चिम के द्वीपों के चक्कर
जिन पर शासन कविगण करते रख नृपभक्ति सूर्य्यदेव में।
मुझे बताया गया बहुत उस विस्तृत, वितत भूमि–विषय में,
राज्य मान निज शासन करता गहन विचारक होमर जिस पर।
किन्तु नहीं मैं श्वास ले सका उसकी विमल वायु में जाकर
नहीं चैपमन को जब तक था सुना प्रोच्च साहसी स्वरों में।
तब मेरी अनुभूति हुई उस व्योमपटल–दृगधारी की,
सहसा आता दृष्टि परिधि में कोई नव ग्रह जिसके,
अथवा मेरी स्थिति उस क्षण थी धीर कार्टेज[1] महाभाग की,
जब प्रशान्त महोदधि आया दृष्टि मार्ग में उनके,
जिसे घूरते रहे खड़े वे आयत अक्षों से गरुत्मान् की,
और डेरियन[2] की चोटी पर स्तम्भित जन थे बिना शब्द के।

रचना–काल : १८१६

१. यहाँ कवि ने एक तथ्यात्मक भूल की है। प्रशान्त महासागर की खोज बैलबोआ ने की थी, न कि कार्टेज ने।
२. पनामा के दक्षिण–पूर्व में स्थित एक निर्जन प्रदेश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## From "Sleep and Poetry" (ll. 1-18)

What is more gentle than a wind in summer?
What is more soothing than the pretty hummer
That stays one moment in an open flower,
And buzzes cheerily from bower to bower?
What is more tranquil than a musk-rose blowing
In a green island, far from all men's knowing?
More healthful than the leafiness of dales?
More secret than a nest of nightingales?
More serene than Cordelia's countenance?
More full of visions than a high romance?
What, but thee sleep? Soft closer of our eyes!
Low murmurer of tender lullabies!
Light hoverer around our happy pillows!
Wreather of poppy buds, and weeping willows!
Silent entangler of a beauty's tresses!
Most happy listener! when the morning blesses
Thee for enlivening all the cheerful eyes
That glance so brightly at the new sun-rise.

(October 1816)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ''स्वप्न और कविता'' से (१-१८)

(टिप्पणी : कीट्स के काव्य–दर्शन को समझने के लिए उसकी प्रारम्भिक कविता ''स्लीप ऐण्ड पोइट्री'' अनिवार्य है। यहाँ इस कविता की प्रथम अट्ठारह पंक्तियों का रूपान्तर प्रस्तुत है।)

होती क्या पवनाधिक ऋजुतर वस्तु कहो गर्मी में,
होता क्या पेशलतर, बोलो, उस शोभन भौंरे से
जो है क्षणभर विरमित रहता खिले हुए फूल के ऊपर
और मुदितमन भनभन करता जाता है झुरमुट पर?
क्या है भला शान्ततर बोलो मस्करोज़ से जो है खिलता
हरी–भरी उस द्वीपभूमि में ज्ञान नहीं जिसका मानव को?
अधिक स्वास्थ्य–उपयोगी क्या है पत्रबहुलता से दरियों की?
बुलबुल–कुल के आलय से भी अधिक निगूढ़ बताओ क्या है?
क्या है अधिक विशद इस जग में कारडीलिया[1]–मुखमण्डल से?
क्या है अधिक संदर्शन–पूरित किसी महा प्रणय–कथा से
तुमको छोड़ कहो हे निद्रे! आँखों को मीलित जो करती!
कोमल लोरी गाने वाली धीरे से अस्फुट भाषा में!
धीरे से मंडराने वाली हम लोगों के उपधानों पर!
अहिफेनकलीदल की व रोते बेतों की मालाकर्त्री!
सुन्दर नारी के अलकों को चुपके से अरुझाने वाली
सबसे अधिक सुखी श्रोत्री हे! जब देती सुबह तुझे आशीष
सभी मुदित नयनों को फिर से करने हेतु सजग–चेतन
जो नव सूर्योदय का हैं करती भास्वर होकर आलोचन।।

१. महाकवि शेक्सपियर के दुःखान्त नाटक 'किंगलियर' में राजा लियर की पुत्री जो पितृभक्ति एवं स्पष्टवादिता का पर्याय मानी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## From *Endymion*, Book I. 1-33

A thing of beauty is a joy for ever:
Its loveliness increases; it will never
Pass into nothingness, but still will keep
A bower quiet for us, and a sleep
Full of sweet dreams, and health, and quiet breathing.
Therefore, on every morrow, are we wreathing
A flowery band to bind us to the earth,
Spite of despondance, of the inhuman dearth
Of noble natures, of the gloomy days,
Of all the unhealthy and o'er- darked ways,
Made for our searching: yes, in spite of all,
Some shape of beauty moves away the pall
From our dark spirits. Such the sun, the moon,
Trees old, and young, sprouting a shady boon
For simple sheep; and such are daffodils
With the green world they live in; and clear rills
That for themselves a cooling covert make
'Gainst the hot season; the mid forest brake,
Rich with a sprinkling of fair musk-rose blooms:
And such too is the grandeur of the dooms
We have imagined for the mighty dead;
All lovely tales that we have heard or read,
An endless fountain of immortal drink,
Pouring unto us from the heaven's brink.
Nor do we merely feel these essences
For one short hour; no, even as the trees
That whisper round a temple become soon
Dear as the temple's self, so does the moon,
The passion poesy, glories infinite,
Haunt us till they become a cheering light
Unto our souls, and bound to us so fast,
That, whether there be shine, or gloom o'ereast,
They alway must be with us, or we die.

(Composed in April 1817)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ''एण्डीमियन'' से ( सर्ग १, १-३३)

(टिप्पणी : कीट्स की रहस्यवादी सौन्दर्य दृष्टि को समझने के लिए ''एण्डीमियन'' को समझना परमावश्यक है। यह एक चार सर्गों का प्रबन्ध काव्य है जिसमें चन्द्रमा की अधिष्ठात्री देवी सिन्थिया और लैटमस पर्वत पर रहने वाले मेषपति एण्डीमियन की प्रेम–कथा वर्णित है। यहाँ ''एन्डीमियन'' के प्रथम सर्ग की प्रथम तैंतीस पंक्तियाँ रूपान्तरित हैं।)

है आनन्द का उत्स चिरन्तन होती सुन्दर वस्तु
और रम्यता विकसित होती जाती उसकी प्रतिपल
और नहीं वह असद्भाव को प्राप्त कभी होवेगी
बल्कि प्रदान करेगी हमको शान्त कुन्ज वह अक्षत
और नित्य सुन्दर स्वप्नों की, स्वास्थ्य तथा निर्बन्धित श्वाँस।
यही हेतु है हम रचते हैं फूलों की अवली हर प्रात
जिससे हम आबद्ध रहें धरती से प्रत्येक दशा में,
भले निराशा हमको घेरे, भले कमी हो सुजनों की,
भले हमारे दिन दुर्दिन हों, भले हमारी खोजी राह
होवे घोर तमस् से निर्मित और पूर्ण अस्वस्थ।
इन सब के होने पर भी कोई स्वरूप सुन्दरता का
करता है दूरीकृत घेरा अन्धकार का मनोपटल से।
ऐसे रूप चारुता के हैं सूर्य, चन्द्र अरु वृक्ष
बूढ़े हों या नये–नबीले, देते जो मेषों को छाया;
ऐसे ही हैं नरगिस अपना लिए हुए हरित संसार
जिसमें धारण करते अपना वे जीवन निर्द्वन्द्व।
निर्मल लघुसरितायें जो रचतीं अपने लिए सुरक्षित क्षेत्र
उग्र ग्रीष्म से परित्राण–हित; वन के मध्य भाग में स्थित
लता–गुल्म जो हैं समृद्ध कस्तूरी–गुलाब के छिड़कन से;
इसी कोटि की मरण–भव्यता होती उन बलवानों की
कल्पित हमने किया जिसे है मृत्यु–प्राप्त उन वीरों हेतु;
वे सारी सुन्दर गाथाएँ हमने सुना–पढ़ा है
हैं अजस्र अमृत का झरना, गिरता हम पर स्वर्ग–छोर से।
ऐसा नहीं कि हम करते हों अनुभव इन ऊर्जाओं का
घण्टे दो घण्टे भर केवल; अपितु यथा तरु होते प्यारे
उस मन्दिर की आत्मा बनकर जिस पर हैं वे फड़–फड़ करते,
वही हाल है चन्द्र देव का, करुण काव्य का और अनन्त विभूतियों का
जो छाई रहती हैं हम पर और अन्त में बन जाती हैं
हम लोगों की आत्मा के प्रति मुद–मंगल की ज्योति मनोहर
और हमारे जीवन से वे जुड़ जाती इस भाँतिः
भले उजाला हो या अंधेरा फैले चारों ओर,
उनका साथ नहीं छुटता है, मृतक अन्यथा हम हो जाते।।

(रचना का समय : अप्रैल १८१७)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## Hence Burgundy, Claret, and Port

Hence Burgundy, Claret and Port,
Away with old Hock and Madeira,
Too couthly ye are for my sport;
There's a beverage brighter and clearer
Instead of a pitiful summer,
My wine overbrims a whole summer;
My bowl is the sky,
And I drink at my eye,
Till I feel in the brain
A Delphian pain-
Then follow, my Caius! then follow!
On the green of the hill
We will drink our fill
Of golden sunshine,
Till our brains intertwine
With the glory and grace of Apollo!

Composed on 31 January 1818)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# दूर हटो बर्गण्डी, क्लैरेट एवं पोर्ट

(टिप्पणी : कीट्स की प्रारम्भिक कविताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली 'हेन्स बर्गण्डी, क्लैरेट ऐण्ड पोर्ट' शीर्षक कविता बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें कवि ने काव्योत्पत्ति–विषयक अवधारणा व्यक्त की है। वह अवधारणा यह है कि कविता अनुभव का तो परिणाम होती है किन्तु उसका उद्‌भव बिना दैवीय प्रेरणा के असम्भव है।)

दूर हटो बर्गण्डी, क्लैरेट एवं पोर्ट
अपने साथ लिए जाओ तुम हाक–मदीरा सम विस्फोट।।
तुम हो गये बहुत बासी अब
मेरी क्रीडा के अयोग्य सब!
पास हमारे पेय एक है
तुमसे अधिक विमल, भास्वर।
एक गिलास की बात ही क्या है
चलता है पूरी गर्मीभर।।
आकाश चषक है मेरा
पीता जिसको नयनों में
जब तक डेल्फी[1] की पीडा
है होती नहीं जेहन में।
सो मित्र हमारे कैयस[2]!
आओ मेरे पीछे बस
चल उस गिरि की हरियाली में
हम छक कर पीयें जी भर
स्वर्णिम प्रभात की आतपता
जब तक नहीं समाती धी[3] में
दिनमणि[4] की कृपा तथा विभुता।

१. ग्रीस देश में एक स्थान जहाँ भगवान् सूर्य (अपोलो) का एक विशाल मन्दिर प्राचीन काल से अद्यावधि स्थित है। चूँकि अपोलो काव्य के अधिपति हैं, 'डेल्फी' काव्य का पर्याय है।
२. कीट्स का मित्र जे० एच० रेनल्ड्स जो "कैयस" उपनाम से रचनाएँ प्रकाशित करता था। ३. बुद्धि ४. ग्रीक देवता अपोलो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# The Eve of St. Agnes

1

St. Agnes' Eve- Ah, bitter chill it was!
The owl, for all his feathers, was a- cold;
The hare limped trembling through the frozen grass,
And silent was the flock in wooly fold,
Numb were the Beadsman's fingers, while he told
His rosary, and while his frosted breath,
Like pious incense from a censer old,
Seemed taking flight for heaven, without a death,
Past the sweet Virgin's picture, while his prayer he saith.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RA 6/8/98



# सन्त ऐग्निस की शाम

(टिप्पणी : यदि मेडिवलिज़्म अर्थात मध्ययुगीन संस्कृति का चित्रण अंग्रेजी रोमांसवादी कविता की सबसे बड़ी विशेषता है, तो कीट्स की इस कविता से बढ़ कर इसका दूसरा कोई उदाहरण पूरे अंग्रेजी रोमांसवादी साहित्य में नहीं मिलेगा। मध्ययुगीन अंग्रेजी संस्कृति कीट्स की प्रस्तुत कविता में अपनी समस्त विशेषताओं के साथ प्रतिबिम्बित है।

मध्ययुगीन ईसाई धर्म के विश्वास के अनुसार यदि कोई बाला पूर्ण निष्ठा पूर्वक शुद्ध मन से २० जनवरी को दिन भर व्रत रखकर रात में बिस्तर पर आकाश की ओर आँख उठाए अपने प्रेमी के दर्शन की मिन्नत मांगे तो उसे स्वप्न में उसका प्रेमी उसे अवश्य मिलेगा। इस अन्धविश्वास के आधार पर ही कीट्स ने अपनी इस अमर कविता का सृजन किया था। २१ जनवरी को एक ईसाई संन्यासिनी ऐगनेस को शहादत प्राप्त हुई थी। यह दिन उसी महिषी को समर्पित है; उसी देवी की कृपा से कुमारी कन्याओं को स्वप्न में उनके प्रेमी का दर्शन प्राप्त होता है, इसलिए कविता के शीर्षक में उसी संन्यासिनी की याद में कुमारियों द्वारा रखे जाने वाले व्रत की ओर संकेत किया गया है। कविता में प्रयुक्त प्रारूप महाकवि स्पेंसर द्वारा ईजाद किया गया प्रारूप "स्पेंसरियन स्टैन्जा" है। यह नौ पंक्तियों का छन्द है जिसमें पहली–तीसरी, दूसरी–चौथी, पाँचवी–सातवीं तथा छठी–आठवीं–नवीं पंक्तियाँ समतुकान्त होती हैं। नवीं पंक्ति शेष आठ पंक्तियों से बड़ी होती है; इसे 'अलेक्ज़ैण्ड्राइन' कहते हैं।)

104001

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

सन्त ऐग्निस की शाम! आह कैसी थी ठण्डक
सबल पंख के होने पर भी था उलूक त्रस्त ठिठुरन से
शिशिरीभूत तृणों पर से लंगड़ाता भागा दुःखी शशक
ऊनी बाड़े में स्थित था मेषों का गण बड़ी शान्ति से
मनकाधारी जपकर्ता का अंगुलिदल था सुन्न ठन्ड से
जब था वह जप रहा सुमिरिनी पर प्रभु के अति सुखद नाम को
अरु उड़ती थी श्वांस तुषारित आगे बढ़ मैरी प्रतिमा से
जैसे पावन हव्यधूम शुचि त्यागे बूढ़े धूपदान को;
बिना मृत्यु लगती थी उसकी श्वासें वे जाती हुई स्वर्ग को।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



2

His prayers he saith, this patient, holy man,
Then takes his lamp, and rises from his knees,
And back returneth, meagre, barefoot, wan,
Along the chapel aisle by slow degrees,
The sculptured dead, on each side, seem to freeze
Imprisioned in black, purgatorial rails:
Knights, ladies, praying in dumb orat'ries,
He passeth by; and his weak spirit fails
To think how they may ache in icy hoods and mails.

3

Northward he turneth through a little door,
And scarce three steps, ere Music's golden tongue
Flattered to tears this aged man and poor,
But no—already had his death-bell rung:
The joys of all his life were said and sung:
His was harsh penance on St. Agnes' Eve:
Another way he went, and soon among
Rough ashes sat he for his soul's reprieve
And all night kept awake, for sinners' sake to grieve.

4

That ancient Beadsman heard the prelude soft,
and so it chanced, for many a door was wide,
From hurry to and fro. Soon, up and aloft,
The silver, snarling trumpets' gan to chide:
The level chambers, ready with their pride,
Were glowing to recieve a thousand guests:
The carved angels, ever eager-eyed,
Stared, when upon their heads the cornice rests
With hair blown back, and wings put cross wise on their breasts.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



२

धैर्यशील उस धर्मात्मा ने पूजा सम्पादित की अपनी
और लिए दीपक निज कर में उठ बैठा वह घुटनों पर से
फिर वह लौटा बिना उपानह, देहयष्टि थी दुर्बल कितनी!
देवालय की पार्श्वसरणियों पर होकर अति मन्द वेग से
जिनके दोनों ओर आलिखित मृतक–वृन्द थे लगते ऐसे
मानों ठिठुर रहे हों सब वे बंधकर लौह शलाकाओं में
मिलती जो अश्वेतवर्ण थीं शुद्धिलोक की जंजीरों से।
मूक प्रार्थनारत वीरों अरु महिलाओं ने अति विस्मय में
डाला उस तापस कोः "कैसे त्रस्त भला हो सकते हैं ये अपने शिरस्त्राण में।"

३

उत्तर दिशा मुड़ा वह तापस वृद्ध–दीन अति, लघु द्वार से
और चला होगा मुश्किल से तीन कदम जब गीति–नाद ने
साश्रु विमोहित किया उसे था मनहर, धवल, सुनहरे सुर से,
किन्तु बहुत पहले दे दी थी अग्रसूचना उसे मृत्यु ने;
इतिश्री कर डाली थी गाकर जीवन के खुशियों की उसने।
कठिन तपस्या करनी उसको थी सन्ध्या पर ऐग्निस की;
गया दूसरी ओर अस्तु वह, और शीघ्र ही चण्ड राख ने
दिया क्रोड में आत्मशुद्धि के हेतु शरण था उस तापस को
और पापियों के निमित्त वह जगा रात भर सन्तपने को।।

४

यह बस था संयोग मात्र कि सुना मधुर रव था प्रारम्भिक
मनकाधारी वृद्ध साधु ने, क्योंकि थे सम्पूर्ण खुले
कई कपाट रंगभूमि के, आने जाने से आकस्मिक।
फिर जल्दी ही रजत वर्ण के तुरही–दल हुंकार चले
समतल अतिथि कक्ष थे तत्पर अपनी सारी सुषमा को ले
स्वागतार्थ अतिथिवृन्द के जो थे एक सहस्त्र से ऊपर।
देख रहे थे घूर–घूर कर देवदूत आलिखित साध ले
आँखों में, उस ओर जहाँ थे कोर्नीस उनके ऊपर
लहराते थे केश पृष्ठतः और लसित थे क्रूस सरीखे पंख वक्ष पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



5

At length burst in the argent revelry,
With plume, tiara, and all rich array,
Numerous as shadows haunting faerily
The brain, new stuffed, in youth, with triumphs gay
Of old romance. These let us wish away,
And turn sole-thoughted, to one Lady there,
Whose heart had brooded all that wintry day,
On love, and winged St. Agnes' saintly care,
As she heard old dames, full many times declare.

6

They told her how, upon St. Agnes' Eve,
Young virgins might have visions of delight,
And soft adorings from their loves receive
Upon the honeyed middle of the night,
If ceremonies due they did aright;
As, supperless to bed they must retire,
And couch supine their beauties, lily white;
Nor look, behind, nor sideways, but require
Of Heaven with upward eyes for all that day they desire.

7

Full of this whim was thoughtful Madeline:
The music yearning like a God in pain,
She scarcely heard: her maiden eyes divine,
Fixed on the floor, saw many a sweeping train
Pass by- she heeded not at all: in vain
Came many a tiptoe, amorous cavalier,
And back retired; not cooled by high disdain
But she saw not: her heart was otherwhere:
She sighed for Agnes' dreams, the sweetest of the year.

8

She danced along with vague, regardless eyes,
Anxious her lips, her breathing quick and short:
The hallowed hour was near at hand: she sighs
Amid the timbrels, and the thronged resort

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



५

उमड़ी आखिरकार वहाँ पर रजत–धवल मदमस्ती, पहने
मोरपंख, शिर–भूषण एवं सभी भाँति के शृगारों को,
संख्या में उन छायाओं की, आती हैं जो मोहित करने
और सदा जो घेरे रहतीं परी सदृश मानवीय बुद्धि को
रहती पूरित विजय दलों से जो पढ़ तरुणाई में प्रेम–कथा को।
छोड़ चलें हम उनकी चर्चा और ध्यान दें उस बाला पर
एकंव्रता जिसके मन ने था सोचा–समझा प्रणय विषय को
और ऐग्निस–वत्सलता को, जाड़े के उस सकल दिवस भर
बहुत बार वृद्धाओं को था उसने सुना बोलते इन बातों पर।।

६

बतलाया उन लागों ने था सन्ध्या पर कैसे ऐग्नीस की
पा सकती हैं सुखवह दर्शन और अर्चना निज प्रेमी से
युवा कुमारी बालाएँ उस मधु–बेला में मध्यरात्रि की
यदि सम्पादित करें क्रियायें आवश्यक वे सही ढ़ंग से:
जैसे, सोना उन्हें चाहिए होकर विरत दिनान्त–भोज से
और चाहिए चित्त लेटना ढ़ीला कर निज़ देहयष्टि को;
निखरें अंग मनोहर उनके, उपमा पाते पुण्डरीक से;
पीछे मत वे मुड़ कर देखें और न अपने किसी पार्श्व को
बल्कि उठाकर आँखें ऊपर मांगे वे प्रभु से निज अभीष्ट को।।

७

रमी इसी धुन में थी पूरी चिन्ताकुल मदलीन कुमारी
और व्यथित थी देवतुल्य वह; सोत्कण्ठ था सुना नहीं
प्रिय संगीत लहरिका को, थीं भू पर दृढ़ आँखें न्यारी;
देखा जाते जन समूह को पर मन था अन्यत्र कहीं।
पंजे के बल चल कर उस तक प्रणयी आये कितने ही
पर निराश हो लौट गये वे रसिया वापस निज आसन पर;
नहीं घृणा थी कारण इसका, हिय उसका था निहित वहीं
जहाँ प्राणबल्लभ थे उसके, चिन्ता करती थी आहें भर
वह बाला ऐग्नीस–स्वप्न की जो था मधुतम और दुःखहर।।

८

करती गई नृत्य वह लेकिन आँखें थी बेसुध निर्लिप्त,
चिन्ताकुल थे अधर और थीं श्वासें प्रतनु तथा सत्त्वर।
थी वह घड़ी पुनीत सन्निकट, उसकी आहें हुई विलुप्त
तम्बूरों में तथा स्थली में जो थी संकलित निकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



Of whisperers in anger, or in sport;
'Mid looks of love, defiance, hate and scorn,
Hoodwinked with faery fancy; all amort
Save to St. Agnes and her lambs unshorn,
And all the bliss to be before tomorrow morn.

9

So purposing each moment to retire,
She lingered still. Meantime, across the moors,
Had come young Porphyro, with heart on fire
For Madeline. Beside the portal doors,
Buttressed from moonlight, stands he, and implores
All saints to give him sight of Madeline.
But for one moment in the tedious hours
That he might gaze and worship all unseen;
Perchance speak, kneel, touch, kiss-in sooth such things
have been.

10

He ventures in: let no buzzed whisper tell:
All eyes be muffled, or a hundred swords
Will storm his heart, love's feverous citadel:
For him, those chambers hold barbarian hordes,
Hyena foemen, and hot-blooded lords.
Whose very dogs would execrations howl
Against his lineage: not one breast affords
Him any mercy, in that mansion foul
Save one old beldame, weak in body and in soul.

11

Ah, happy chance! the aged creature came
Shuffling along with ivory-headed wand
To where he stood, hid from the torch's flame
Behind a broad hall-pillar, far beyond
The sound of merriment and chorus bland:
He startled her; but soon she knew his face,
And grasped his fingers in her palsied hand
Saying, ' Mercy, Porphyro! hie thee from this place:
They are all here tonight, the whole blood thirsty race.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वार्ताकारों का कर्णों में कोपाकुल या क्रीडाकर।
प्रेम, घृणा, मत्सर एवं प्रतिरोधपूर्ण नयनों के बीच
रम्य कल्पना में खोई वह इनके लिए गई थी मर।
प्रातपूर्व प्रापणीय सौख्य ने अपनी ओर लिया था खींच
और पुनीत मेषशिशु एवं सन्त ऐग्नीस की सुधि ने भींच।।

९

प्रतिपल हटने का उपक्रम वह करती हुई वहीं थी स्थित
इसी बीच में कच्छभूमि को लाँघ फाँद परफीरो आया
मदलीना–प्रति प्रणय अग्नि थी जिसके हिय में पूर्ण प्रज्वलित।
मुख्य द्वार के पास चन्द्रिका से हट उसने विनय सुनाया
सभी सन्त समुदायों को कि वे मदलीना का रूप दिखा दें
नीरस जीवन में चाहे वह क्षण भर को ही सुख–छाया
जिससे सके निहार उसे वह और अदृष्ट अर्चना दे दे
अरु सम्भवतः नमन करे, बोले, परसे एवं चुम्बित भी कर दे।।

१०

वह करता दुस्साहस, लेकिन कोई मत किंचित् बोले
मुंद जायें आंखें सब अथवा निकल पड़ेंगी सौ तलवारें,
कर देंगी वे हृदय विदारित जो है दुर्ग प्रेम का उबले।
उन कक्षों में भरी पड़ी थीं उसके लिए जंगली ढोरें–
व्याघ्रतुल्य सामन्तों का दल जो थे उष्ण रक्त से पूरे,
जिनके कुत्ते भी दे देंगे उसको देख सैकड़ों गाली
उसके सारे खानदान को; नहीं एक भी छाती में रे
उसके लिए दया–ममता कुछ; दुष्ट महल था इनसे खाली
छोड़ एक उस वृद्धा को जो थी तन–मन दोनों से ही अभली।।

११

अहा सुयोग ! वृद्ध धाई वह सहसा पहुंची उसी जगह
टेक टेक कर, हस्तिदन्तमुख लाठी पर होकर आधारित
जहां अवस्थित था कुछ हटकर दूर मशालों की लौ से वह
महागार के एक बड़े खम्भे के पीछे होकर विपिहित
रंगरलियों एवं मतवाले गायकदल की ध्वनि से दूरित।
किया चकित उसने बुढ़िया को, पर पहचान गई वह उसको
और उंगलियों को उसकी लेकर निज कर में कम्पित
कहने लगीः "हाय पारफिरो ! कर दो दूर यहां से निजको
हैं वे यहां इकट्ठे नर–पशु, रक्त–पिपासु आज रात को।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



12

'Get hence! Get hence! there is dwarfish Helderbrand
He had a fever late, and in the fit
He cursed thee and thine, both house and land:
Then there is old Maurice, not a whit
More tame for his grey hairs-Alas me! flit!
Flit like a ghost away'--'Ah, Gossip dear,
We're safe enough; here in this arm-chair sit,
And tell me how'- 'Good saints! not here, not here
Follow me child, or else these stones will be thy bier."

13

He followed through a lowly arched way,
Brushing the cobwebs with his lofty plume,
And as she muttered, 'Well-a-day!'
He found him in a little moonlight room,
Pale latticed, chill, and silent as a tomb.
'Now tell me where is Madeline,' said he,
'O tell me, Angela! by the holy loom
Which none but secret sisterhood may see,
When they St. Agnes' wool are weaving piously'-

14

'St. Agnes! Ah! it is St. Agnes' Eve-
Yet men will murder upon holy days:
Thou must hold water in a witch's sieve
And be liege-lord of all the Elves and Fays
To venture so: it fills me with amaze
To see thee, Porphyro!- St. Agnes's Eve
God's help! my lady fair the conjuror plays
This very night: good angels her deceive
But let me laugh awhile, I've mickle time to grieve.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१२

"भगो यहां से, भगो यहां से ! हिल्डरब्रैण्ड यहां है स्थित,
बौने ने दी ज्वरावेश में गाली तुम्हें, तुम्हारे कुल को
जब था कुछ दिन पहले अब से मन्दभाग्य वह ज्वर से पीड़ित
फिर वह बूढ़ा मौरिस भी है, झुटलाता जो पलित केश को।
हा हतभाग्य ! दुःखी अबला मैं ! भागो, छोड़ो इस स्थल को,
भागो प्रेत--समान अलक्षित !" "अरे नहीं बहुवादिनि प्यारी !
हम हैं पूर्ण सुरक्षित मैय्या ! ग्रहण करो इस सुख आसन को
और बताओ कैसे ..." "हे सन्तो ! तुम देखो यह अचरज भारी
यहां नहीं, बेटे ! आओ तुम पीछे मेरे या ये पत्थर कब्र तुम्हारी"।

१३

किया अनुसरण उसका उसने पथ पर जो था मेहराबी, तंग,
झाड़ पोंछ करता जालों की निज उत्तुंग काकपक्ष से
और कहा ज्यों उस धाई ने, "लाया शुभदिन कैसा रंग"
वह पहुंचा जा लघु प्रकोष्ठ में शोभित जो था चन्द्रकान्ति से
अरु समाधिवत् शान्त, पीत था ठंडा, शोभित जालकदल से।
पूछा उसने "बतलाओ अब कहां प्राण मदलीना प्यारी ?
शुचि करघे की कसम, ऐन्जिला ! दिलवा दो तुम प्यारा संग–
करघा जिसे देखतीं केवल गुह्यव्रता बहनें न्यारी
जब वे बुनतीं ऊन भक्ति से सन्त ऐग्नीसहित सदाकुमारी।"

१४

"सन्त ऐगनिस ! हां, संन्ध्या है यह ऐग्नीस की !
फिर भी लोग नहीं चूकेंगे पावन दिन पर भी हत्या से।
होगे सक्षम तुम ढ़ोने में पानी चलनी में चुड़ैल की,
पाते होगे राजभक्ति तुम अप्सर–दिव्यवधू–समूह से !
तभी किया यह दुस्साहस है; मुझको होता विस्मय इससे।
यहां पारफिरो ! तुम हो स्थित पावन सन्ध्या पर ऐग्नीस की
ईश्वर हों साहाय्य ! आज हैं आर्या उपमित जादूगर से !
करतीं वे अभिचार आज की रात, प्रवंचित कर दें उनको
अच्छे देवदूतगण ! लेकिन क्षणभर हंसने दो इस बुढ़िया को"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



15

Feebly she laugheth in the languid moon
While Porphyro upon her face doth look,
Like a puzzled urchin on an aged crone
Who keepeth closed a wondrous riddle-book
As spectacled she sits in chimney nook
But soon his eyes grew brilliant, when she told
His lady's purpose; and he scarce could brook
Tears, at the thought of those enchantments cold
And Madeline asleep in laps of legends old.

16

Sudden a thought came like a full-blown rose.
Flushing his brow, and in his pained heart
Made purple riot: then doth he propose
A stratagem, that makes the beldame start:
'A cruel man and impious thou art:
Sweet lady, let her pray, and sleep, and dream
Alone with her good angels, far apart
From wicked men like thee. Go, go!-I deem
Thou canst not surely be the same that thou didst seem.'

17

'I will not harm her, by all saints I swear',
Quoth Porphyro: 'O may I ne'er find grave
When my weak voice shall whisper its last prayer,
If one of the soft ringlets I displace,
Or look with ruffian passion in her face.
Good Angela, believe me by these tears;
Or I will, even in a moment's space,
Awake, with horrid stout, my foemen's ears
And beard them, though they be more fanged than wolves
and bears.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१५

क्षीण चन्द्रिका में हंस दी जब मन्द हंसी वह वृद्धा धाई
खड़ा पारफिरो देख रहा था मुखड़ा उसका अति विस्मय से
जैसे भौचक्का हो देखे दादी को विस्मित शिशु कोई
जो होती है बन्द पहेली पुस्तक पूरित अति अचरज से
जब वह चिमनी निकट बैठती आंखें सजा खूब ऐनक से।
पर उसकी थीं चमकी आंखें जब वृद्धा ने उसे बताया
निज आर्या का इष्ट और तब सका रोक वह अश्रु कष्ट से
जब उन थोथे अभिचारों का भाव उमड़ता मन में आया
तथा पुरावृत्तों से उसने मदलीना को मोहित अति पाया।

१६

पूर्ण विकासप्राप्त पाटल सम एक विचार कौंध कर आया,
भौहें चमक उठीं तब उसकी, हलचल मची शूलमय हिय में
हलचल का था रंग बैजनी; फिर उसने योजना सुनाया
जिसको सुन आघात लगा उस वृद्धा धाई को मन में।
"हो तुम एक निर्दयी मानव और अपावन सचमुच में।
मधुर स्वभावा आर्या मेरी, तुम सम दुष्टों से रह दूर,
एकाकी सत्देवदूतसंग वन्दन कर खो जांय नींद में
और करें विचरण स्वप्नों में ! भाग यहां से पामर क्रूर !
तुम निश्चय ही नहीं व्यक्ति वह जो थे दिखे शील से पूर।"

१७

"अहित नहीं होगा उसका कुछ, कसम मुझे है सब सन्तों की,"
बोल उठा परफिरो, "मिले मत वृद्धा धाई ! कथमपि मुझको
ईसु–कृपा, जब स्तुति गाये क्षीण कण्ठ मम अन्त समय की
यदि मैं कर डालूं विस्थापित उसके कुंचित केशपाश को
या मैं देखूं कामुकता से उसके सुन्दर मुखमण्डल को !
मेरा कर विश्वास ऐन्जिला ! अच्छी धाई ! अश्रुकणों से
अथवा पल भर में शत्रुगणों के मैं कर्णो को
फाड़–फाड़ कर रख दूंगा, सुन, अपने भीषण चीत्कार से
और नोच लूंगा मैं दाढ़ी अधिक भयंकर यद्यपि हैं वे बाघों और भालुओं से।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



18

"Ah! why wilt thou affright a feeble soul?
A poor, weak, palsy-striken, Church-yard thing,
Whose passing-bell may ere the midnight toll;
Whose prayers for thee, each morn and evening,
Were never missed.'- Thus plaining, doth she bring
A gentler speech from burning Porphyro;
So woeful, and of such deep sorrowing,
That Angela gives promise she will do
Whatever he shall wish, betide her weal or woe.

19

Which was to lead him, in close secrecy,
Even to Madeline's Chamber, and there hide
Him in a closet, of such privacy
That he might see her beauty unespied,
And win perhaps that night a peerless bride,
While legioned faeries paced the coverlet,
And pale enchantment held her sleepy-eyed.
Never on such a night have lovers met,
Since Merlin paid his Daemon all the monstrous debt.

20

'It shall be as thou wishest', said the Dame:
'All cates and dainties shall be stored then
Quickly on the feast night: by the tambour frame
Her own lute thou wilt see: no time to spare,
For I am slow and feeble, and scarce dare
On such a catering trust my dizzy head.
Wait here, my child, with patience; kneel in prayer
The while, Ah! thou must needs the lady wed,
Or may I never leave my grave among the dead.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१८

"अरे डराते क्यों हो भाई तुम इस अति दुर्बल प्राणी को
जो है वस्तु दरिद्र, दुःखी, लकवा की मारी, कब्रगाह की
अर्द्धरात्रि के पूर्व कदाचित् सुन लोगे जिसके मृत्युघण्ट को
जिसने सायं प्रातः नियमित तेरे हित नित स्तुति है की
नागा बिना आज तक भाई !" ऐसे उपालम्भ से उसकी
द्रवित हुआ अभितप्त परफिरो बोल उठा यों मीठी वाणी,
करुण रवों से पूरित एवं आगर अति गम्भीर व्यथा की
कि ऐन्जिला द्रवित हो बोली : "होऊंगी तव इष्टकारिणी
अपना वचन निभाऊंगी मैं, पार लगे या डूबे मम तरणी।"

१९

वह यह था : मदलीन–कक्ष तक बड़े यत्न से गुप्तरूप से
पहुंचाए वह और छिपा दे पारफिरो को गूढ़ कक्ष में
जहां अलक्षित रह वह निरखे अपने शोभन अक्ष–युग्म से
मदलीना की रूप–राशि को जो थी दुर्लभ सकल जगत् में
और कदाचित पाये अनुपम वधू अलौकिक उस निशीथ में
जब लाखों परियां मंडरायें आकर प्रिया–तल्प के ऊपर
और पीत अभिचार किये हों उसके निद्रित दृग को वश में।
नहीं मिलें हैं प्रेमी पहले महारात्रि में ऐसी दुष्कर
चुका दिया राक्षसी कुऋण को जब से मर्लिन[1] ने प्राण गंवाकर।

[1] वेल्स देश के प्राचीन राजा आर्थर का समकालीन जादूगर, कवि और भविष्यवक्ता, जिसके राक्षस पिता ने उसे जादुई शक्ति दी थी जिसका रहस्य उसने अपनी प्रेमिका निमी या निमियानी को बता दिया था। निमी ने उन्हीं रहस्यों की सहायता से मर्लिन का विनाश किया था।

२०

"जैसा तुम कहते हो होगा वैसा ही," बोली वह बुढ़िया
"सभी मधुर पक्वान्न इकट्ठे किए जायेंगे इस कमरे में
बहुत शीघ्र ही इस मधु निशि में और देखना जी भर भैय्या !
आर्या की वीणा को जो है रखी हुई तम्बूर–पार्श्व में।
व्यर्थ नहीं तुम समय गंवाना, मैं हूं निर्नल, मन्द कार्य में।
पाक–प्रबन्ध दुरूह कार्य है, अविश्वास मम कम्पित शिर पर।
करो प्रतीक्षा यहीं वत्स ! तुम धारण करके धीरज मन में
तब तक झुककर स्तुति कर लो, प्रिया विवाहोगे बन तद्वर
अथवा त्यागूं नहीं कब्र मैं, मृतकगणों में रह, अवसर पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



**21**

So saying, she hobbled off with busy fear.
The lover's endless minutes slowly passed;
The dame returned, and whispered in his ear
To follow her; with aged eyes aghast
From fright of dim espial. Safe at last
Through many a dusky gallery, they gain
The maiden's chamber, silken, hushed and chaste
Where Porphyro took covert, pleased amain.
His poor guide hurried back with agues in her brain.

**22**

Her faltering hand upon the balustrade,
Old Angela was feeling, for the stair,
When Madeline, St. Agnes' charmed maid,
Rose, like a missioned spirit, unaware:
With silver taper's light, and pious care,
She turned, and down the aged gossip led
To a safe level matting. Now prepare,
Young Porphyro, for gazing on that bed;
She comes, she comes again, like ring-dove, frayed and fled.

**23**

Out went the taper as she hurried in;
Its little smoke, in pallid moonshine, died:
She closed the door, she panted, all akin
To spirits of the air, and visions wide-
No uttered syllable, or, woe betide!
But to her heart, her heart was voluble,
Paining with eloquence her balmy side;
As though a tongueless nightingale should swell
Her throat in vain, and die, heart-stifled, in her dell.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



२१

ऐसा कहती हुए भगी वह लंगड़ाती ले व्यस्त कुशंका
अन्तहीन अरु घड़ियां बीतीं उस प्रेमी की हौले हौले।
कानों में आदेश दिया उसको निज पीछे आने का
प्रत्यागत होकर धाई ने, वृद्ध नयन थे उसके पथरीले
भय के कारण मन्ददृष्टि के : आखिरकार सहारा ले
मन्दकान्ति दीर्घाओं का वे सकुशल पहुंचे शयनकक्ष में
बाला के उस, जो था नीरव, अंशुकमण्डित, पावनता ले।
वहां पारफिरो जा छिप बैठा, आनन्दित होकर अति मन में
मार्गदर्शिका भागी वापस तुरत लिए जूड़ी निज शिर में।।"

२२

सोपानों की स्तम्भराजि, पर निज कम्पित कर रख वह धाई
नीचे जाने हेतु रही थी साध स्वयं को वृद्ध ऐन्जिला
जब वह मंत्रविमोहित बाला ऐग्नीस की उस ढिग आई
उठकर बिस्तर से बेसुध हो, आई ज्यों आत्मा मतवाली
दैवी आज्ञा से, ले करके रजत–ज्योति सच्चिन्ता वाली।
मुड़कर, नीचे पहुंचा आई वह उस बकवादी बुढ़िया को
समतल सुभग फर्श तक जो थी मैंटिग से अत्यन्त भली।
हो जा अब तैयार, परफिरो ! बिस्तर में दृष्टि गड़ाने को !
आती, वह आती भयभीता उस पेडुकी–सी खोया है जिसने निज गृह को।।

२३

जैसे हुई प्रविष्ट कक्ष में वह, सत्त्वर बुझ दीप गया;
खिन्न चन्द्रिका में था उसका अल्प धूम हो गया तिरोहित,
उसने किए कपाट बन्द अरु सोद्वेग निःश्वास लिया।
था तुलनीय वायु–जीवों से यह सब और स्वप्न सा विस्तृत।
नहीं अंश भी एक शब्द का उसके द्वारा हुआ उच्चरित
ओगा घोर अनर्थ अन्यथा ! पर था निजप्रति हिय वाचाल
और वक्तृता द्वारा था वह हृद्–भागों को किए सुपीड़ित
मानों गूंगा बुलबुल कोई गीतिकाम दे कण्ठ विफाल
और तड़प कर मर जाये वह निज घाटी में होकर बेहाल।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## 24

A casement high and triple-arched there was,
All garlanded with carven imageries
Of fruits, and flowers, and bunches of knot-grass,
And diamonded with panes of quaint device,
Innumerable of stains and splendid dyes,
As are the tiger-moth's deep-damasked wings;
And in the midst 'mong thousand heraldries,
And twilight saints, and dim emblazonings,
A shielded scutcheon blushed with blood of queens and kings.

## 25

Full on this casement shone the wintry moon,
And threw warm gules on Madeline's fair breast,
As down she knelt for heaven's grace and boon;
Rose-bloom fell on her hands, together pressed,
And on her silver cross soft amethyst,
And on her hair a glory, like a saint:
She seemed a splendid angel newly dressed,
Save wings, for heaven:- Porphyro grew faint,
She knelt, so pure a thing, so free from mortal taint.

## 26

Anon his heart revives: her vespers done,
Of all its wreathed pearls her hair she frees;
Unclasps her fragrant bodice; by degrees
Her rich attire creeps rustling to her knees;
Half-hidden, like a mermaid in sea-weed
Pensive awhile she dreams awake, and sees,
In fancy fair St. Agnes in her bed,
But dares not look behind, or all the charm is fled.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



२४

वहां अवस्थित वातायन था ऊंचा और सर्वथा शोभित
मेहराबों के त्रय से जिसमें थे उत्कीर्ण चित्र नाना विधि
फूलों और पत्तियों एवं नाटग्रास के हो मालायित
और जटित था शीशों से वह जो थे अजब स्वरूपों की निधि
नाना रंजनद्रव्यों एवं विविध–विविध वर्णो से रंजित
जैसे हों वे पंख विरंजित मखमलमसृण शार्दूल–शलभ[1] के
और मध्य में वातायान के, संग जिए कुलचिन्ह पयोनिधि
सज्जित द्वाभ साधुओं एवं धूमिल चित्रों से राजकुलों के
ढालनुमा शुचि वंशवृक्ष था शरमाता शोणित से राजा और रानियों के।।

१. अनेक रंगों वाला एक विशालकाय टिड्डा जिसे अंग्रेजी में टाइगरमाथ कहा जाता है।

२५

चमक रहा था पूर्ण चन्द्रमा जाड़े का उस वातायन पर
और वक्ष पर मदलीना के था बिखेरता उष्ण प्रभाएं
जब वह स्वर्गिक दयादृष्टिहित अवनत थी घुटनों के ऊपर।
उसके बद्ध करों पर विकिरित थीं शोभन पाटल आभाएं,
रजत क्रूस पर उसके शोभित थीं हल्की गोमेद–छटाएं
और भाल पर भासमान थी सन्तसुलभ महनीय भव्यता
नवविधिसज्जित देवदूतसम लगती थी भर भव्य विभाएं
केवल उसके पंख नहीं थे; छाई पारफिरो पर जड़ता
घुटनों पर जब झुकी हुई थी वह निष्पाप साक्षात् विमलता।।

२६

हुआ परफिरो लब्धसंज्ञ, अरु होने पर पूजा पूरी
मदलीना ने मुक्त किया निज कबरी को मालायित मुक्ताओं से;
उष्णीभूत भूषणों से भी क्रमशः उसने कर ली दूरी।
ढ़ीला हुआ सुगन्धित कंचुक; धीरे धीरे तन पर से
सर सर करते वस्त्र गिरे जा लिपट झटिति तत्घुटनों से।
अर्द्धनिगूढ़ मत्स्यबाला सम थी वह जम्बालों से छादित।
जगते में ही सपने देखे हो आकुल चिन्ताओं से
और कल्पना में पाया शुचि ऐग्नीस को शय्याराधित।
पर न सकी वह देख पृष्ठतः क्योंकि होंगे सब अभिचार पलायित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



27

Soon, trembling in her soft and chilly nest,
In sort of wakeful swoon, perplexed she lay
Until the poppied warmth of sleep oppressed.
Her soothed limbs, and soul fatigued away;
Flown, like a thought, until the morrow-day;
Blissfully havened both from joy and pain,
Clasped like a missal where swart Paynims pray;
Blinded alike from sunshine and from rain,
As though a rose should shut, and be a bud again.

28

Stol'n to this paradise, and so entranced,
Porphyro gazed upon her empty dress,
And listened to her breathing, if it chanced
To wake into a slumberous tenderness;
Which when he heard, that minute did he bless,
And breathed himself: then from the closet crept,
Noiseless as fear in a wide wilderness,
And over the hushed carpet, silent, stepped,
And 'tween the curtains peeped, where, lo! how fast she slept.

29

Then by the bed-side, where the faded moon
Made a dim, silver twilight, soft he set
A table, and, half-anguished, threw there on
A cloth of woven crimson, gold and jet:-
O for some drowsy Morphean amulet!
The boisterous, midnight, festive clarion,
The kettle-drum, and far-heard clarinet,
Affray his ears, though but in dying tone:-
The hall door shuts again, and all the noise is gone.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



२७

शीघ्र पहुंच कांपती हुई वह अपने शीतल, मसृण नीड़ को
व्याकुल चेतन–निश्चेतन की स्थिति से होकर ग्रस्त
पड़ी रही वह तब तक जब तक उसके तरलीकृत अंगों को
निद्रा की मादक ऊष्मा ने नहीं किया था अतिशय त्रस्त
और नहीं उड़ गई चेतना, चिन्ता–सम, ऊष्मा से पस्त
प्रातः तक के लिए; और थी वह सानन्द, दूर सुख दुःख से
बन्द प्रार्थना पुस्तक जैसे कुत्सित नास्तिकजन में व्यस्त।
आतप–वर्षा दोनों ही से थी अचेत वह तुल्य रूप से
मानों पाटल सकुचाए अरु कलीरूप हो जाए फिर से।।

२८

आहृत हो इस दिव्य लोक में और प्राप्त होकर समाधि को
निरख त्यक्त परिधान रहा था पारफिरो अपलक नयनों से
और रहा था श्वासों को सुन उत्सुक पता लगाने को
क्या प्रसूत मसृण श्वासें थीं वे तत्सुप्तावस्था से
और ज्ञान यह हो जाने पर करने लगा डाह भाग्य से।
हुआ स्वतः सोच्छ्वास निस्सृत वह गूढ भूमि से हो अति शान्त
जैसे भय स्तब्ध भाव से गुजरे अति एकान्त प्रान्त से।
फिर निःस्वन कालीनों पर था कदम बढ़ाया मूक नितान्त
और झांक पर्दों से देखा बाला सोई थी कैसी विश्रान्त।।

२९

तब उसने सन्निकट तल्प के, जहां विनिर्मित था करता
क्षीण चन्द्रमा द्वाभा धुंधली रजत वर्ण की, बिछा दिया
चतुष्पाद आसन धीरे से, लेकर हिय में प्यार धधकता।
उस पर रक्त, पीत, अरु काला कढ़ा वस्त्र फिर सजा दिया।
तन्द्रादायी ताबीज़ मिले यदि मारफियस[1] की खिले हिया !
तुमुल नाद उत्सव का करती अर्द्धरात्रि की तुरही
दूरश्रव्य शहनाई एवं जल तरंग ने त्रस्त किया
उसके कर्णों को यद्यपि थी उनकी ध्वनि वह सतही।
होता बन्द कपाट पुनः है, होते सब स्वन नष्ट स्वतः ही।।

[1]स्वप्न का देवता (ग्रीक पुरावृत्त के अनुसार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## 30

And still she slept on azure-lidded sleep,
In blanched linen, smooth, and lavendered,
While he from forth the closet brought a heap
Of candied apple, quince, and plum, and gourd;
With jellies soother than the creamy curd,
And lucent syrups, tinct with cinnamon;
Manna and dates, in argosy transferred
From Fez; and spiced dainties, every one,
From silken Samarcand to cedared Lebanon.

## 31

These delicates he heaped with glowing hand
On golden dishes and in baskets bright
Of wreathed silver: sumptuous they stand
In the retired quiet of the night,
Filling the chilly room with perfume light-
"And now, my love, my seraph fair, awake!
Thou art my heaven, and I thy eremite:
Open thine eyes, for meek St. Agnes' sake,
Or I will drowse beside thee, so my soul doth ache?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



३०

नीली पुतली से आवृत थी निद्रा में वह अब भी मग्न
शुभ्र लैवेण्डरवासित[1] कोमल मखमल पर आनन्दित लेटी।
किन्तु निगूढ़ कक्ष से वह ले आता जा जा मधु पक्वान्न–
बेर, सेब, तरबूज, खुबानी– सभी वस्तुएं मधु में फेंटी–
चटनी बहु विधि संग वहां थी– साढ़ीदार दही की बेटी,
कई तरह के मीठे शर्बत जो थे केसर द्वारा वासित,
मान्ना[2] और खजूर, समुन्नत जिनसे थी फेज़[3] की चोटी
और सभी सुस्वादु सुव्यन्जन मिर्च–मसालों से अनुलेपित
समरकन्द[4] से लेबनान[5] तक– सभी जगह से जो थे आयातित।

[1] आल्प्स पर्वत पर पायी जाने वाली 'लैवेण्डर' एक लता है जिससे सुगन्धित द्रव्य बनते हैं; यह केवड़े से मिलती है। अतः 'लैवेण्डरवासित' शब्द का अर्थ है 'वह वस्तु जिसमें लैवेण्डर की गन्ध व्याप्त है। [2] यहां पर इस शब्द का प्रयोग दिव्य फल के अर्थ में है। [3] अफ्रीका के मोरक्को देश की राजधानी, जो उद्योगों का बहुत बड़ा केन्द्र थी। [4] पश्चिमी उज़बेकिस्तान का प्रसिद्ध नगर जो चीन और योरोप के व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र था; यह अंशुक (सिल्क) के लिए बहुत प्रसिद्ध था। [5] पश्चिमी एशिया का भूमध्यसागर के तट पर स्थित देश जिसकी राजधानी बीरूत है। यहां से फल और तरकारियां योरोप जाती थीं।

३१

गांज दिया निज भास्वर कर से उसने इस व्यंजन–समूह को
स्वर्णिम थालों पर एवं उन कौंध रही टोकरियों में
मालाकार रजत से सज्जित, ढोते थे जो अतिशोभा को
उस निशीथ की उस विरमित एकान्त शान्त नीरवता में।
भर दी भीनी गन्ध उन्होंने शीतप्राय उस शयनकक्ष में।
"अब तुम मेरी देवदूतिके ! प्रेयसि प्यारी ! उठ बैठो।
तुम तो मेरा स्वर्ग–लोक हो, मैं ऋत्विक् तेरी सेवा में।
तुम्हें शपथ है ऐग्नीस की विनयशील, आंखें खोलो
या तेरे ढिग ढुलक पड़ूंगा व्यथितहृदय मैं, मत भूलो।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



**32**

Thus whispering, his warm, unnerved arm
Sank in her pillow. Shaded was her dream
By the dusk curtains:- 'twas a midnight charm
Impossible to melt as iced stream:
The lustrous salvers in the moonlight gleam;
Broad golden fringe upon the carpet lies:
It seemed he never, never could redeem
From such a steadfast spell his lady's eyes;
So mused awhile, entoiled in woofed phantasies.

**33**

Awakening up, he took her hollow lute,-
Tumultous, -and, in chords that tenderest be,
He played an ancient ditty, long since mute,
In Provence called, 'La belle dame sans merci':
Close to her ear touching the melody;-
Wherewith disturbed, she uttered a soft moan:
He ceased-she panted quick-and suddenly
Her blue affrayed eyes wide open shone:
Upon his knees he sank, pale as smooth-sculptured stone.

**34**

Her eyes were open, but she still beheld,
Now wide awake, the vision of her sleep:
There was a painful change, that nigh expelled
The blisses of her dream so pure and deep
At which fair Madeline began to weep,
And moan forth witless words with many a sigh;
While still her gaze on Porphyro would peep;
Who knelt, with joined hands and piteous eye,
Fearing to move or speak, she looked so dreamingly.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



३२

जब था उसके कर्णों में बह रहा विनय कर धीरे से
उसकी उष्ण भुजा जा डूबी अनियंत्रित होकर तकिये में
उस बाला के जिसका सपना था छादित श्यामल पर्दों से।
गुह्यक्रिया वह अति अभेद्य थी बाला की उस अर्द्धरात्रि में
जैसे असम्भाव्य पिघलाना हिम को होता है हिमनद में।
चमक रहे थे थाल सभी वे धौत चन्द्रिका में अति भास्वर
झालर स्वर्णिम और दीर्घ थी विलसित अति ही चित्रास्तर में।
लगता था अब कभी नहीं वह मुक्त कर सकेगा कातर
दृढ़ मंत्रों से प्रियानयन को सोचा क्षणभर उसने दुश्चिन्ता कर।।

३३

यत्न जगाने का कर उसने उठा लिया उसकी वीणा को
जो थी झंकृतिवती, सुरीली अरु विलसित गम्भीर उदर से
और छेड़ दी उसके ऊपर पुरा–गीत की स्वर–लहरी को
जो था ख्यात प्रवांसनगर में 'दया हीन सुन्दरी' नाम से।
चिरअगीत उस गीतिनाद को किया ध्वनित प्रेयसी पार्श्व से
जिससे उद्वेजित हो बाला ने एक मधुर क्रन्दन कर डाला।
वह कुछ रुका, श्वांस ली उसने, जल्दी जल्दी तीव्र वेग से।
अपने भीत नील नयनों को मदलीना ने ज्यों खोला
लुढ़का वह उसके घुटनों में हो समुत्कीर्ण प्रस्तर सम पीला।।

३४

आंखें खुली हुई थीं उसकी पर वह देख रही थी अब भी
पूर्णतया होकर प्रबुद्ध भी निद्रागत उस निज सपने को
जिसमें था अब दुःखवह अन्तर जिससे अपहृत हुईं सभी
खुशियां उसके गहन स्वप्न की जो था प्राप्त परम शुचिता को।
इस पर बस बहु रोना आया उस निष्पाप कुमारी को।
करने लगी प्रलाप अनर्गल वह पी सिसकी का प्याला
यद्यपि घूर रही थीं आंखें उसकी अपने पारफिरो को
था करबद्ध जानुनत हो जो दयाकांक्षिनयनों वाला,
वार्ता करने या हटने से वह डरता था क्योंकि स्वप्नलीन दिखती थी बाला।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



35

"Ah, Porphyro! said she, 'but even now
Thy voice was at sweet tremble in mine ear,
Made tuneable with every sweetest vow;
And those sad eyes were spiritual and clear:
How changed thou art! how pallid, chill and drear!
Give me that voice again, my Porphyro,
Those looks immortal, those complainings dear!
Oh leave me not in this eternal woe,
For if thou diest, my love, I know not where to go."

36

Beyond a mortal man impassioned far
At these voluptuous accents, he arose,
Ethereal, flushed, and like a throbbing star
Seen amid the sapphire heaven's deep repose;
Into her dream he melted, as the rose
Blendeth its odour with the violet-
Solution sweet: meantime the frost-wind blows
Like Love's alarum pattering the sharp sleet
Against the window-panes; St. Agnes' moon hath set.

37

'Tis dark: quick pattereth the flaw-blown sleet.
'This is no dream, my bride, my Madeline!'
'Tis dark: the iced gusts still rave and beat.
'No dream, alas! alas! and woe in mine!
Porphyro will leave me here to fade and pine—
Cruel! what traitor could thee hither bring?
I curse not, for my heart is lost in thine,
Though thou forsakest a deceived thing—
A dove forlorn and lost with sick unpruned wing.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



३५

"आह ! पारफिरो !" बोली बाला, "किन्तु अभी कुछ पहले ही
मेरे कर्णकुहर में नादित थी तेरी मंजुल स्वरसरिता
करता था मधुध्वनिमय जिसको मृदुतम तव संकल्प सही
करुणाकलित नयन को तेरे थी छूती निर्मल आध्यामिकता
पर तुम बदल गये पड़ पीले कैसे इतनी ले नीरसता ?
मेरे पारफिरो ! दो मुझको वही मधुर स्वरलहरी फिर से
वही अमर बांकी चितवन अरु वही सप्रेम उपालम्भता !
अरे त्यागना मत तुम मुझको इस शाश्वत दुःख में अदया से
प्रियवर ! तुम यदि मर जाओगे, जाऊंगी मैं कहां यहां से ?"

३६

सुनकर कामद स्वर ये मीठे कहीं अधिक भावुक होकर
मरणशील मानव से था वह उठ बैठा अरुणाभ प्रभामय।
लगता जैसे तारा कोई तीव्र रहा हो स्पन्दन कर
नीलमवर्ण व्योमक्रोड में अति गम्भीर और शान्तिमय।
उसका वह नवरूप हुआ उस बाला के सपने में तन्मय
जैसे पाटल पर पराग मिलकर बैजन्ती के मधुरस से
होता है तद्रूप; तभी थी बहने लगी बयार तुहिनमय
करती हुई प्रताड़ित शीशों को वातायन के ओलों से
जैसे हो वह स्मरविभीषिका; एंग्निस के चन्द्रदेव थे अस्तप्राय से।

३७

"घोर तमस है और गिर रहे पड़ पड़ करते हिम के खण्ड
मेरी सहचरि ! मदलीने हे ! यह कोई है स्वप्न नहीं।
घोर तमस ! देते अब भी बर्फीले झोंके देखो दण्ड।"
"स्वप्न नहीं यह कोई ? तब तो नहीं हमारा त्राण कहीं!
पारफिरो हा ! विरह–ज्वाल में छोड़ चले हो मुझे यहीं ?
निर्दय ! किस घाती ने तुमको था पहुंचाया मेरे पास ?
मेरा हृदय समाहित तुममें, देती तुमको शाप नहीं
यद्यपि तुम इस प्रवंचिता को छोड़ यहां करते उपहास
परित्यक्त उस पारावत का हैं जिसके पंखे रुग्ण तथा अप्राप्तप्रकाश।।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



38

'My Madeline! sweet dreamer! lovely bride!
Say, may I be for aye thy vassal blest?
Thy beauty's shield, heart-shaped and vermeil dyed?
Ah, silver shrine, here will I take my rest
After so many hours of toil and quest,
A famished pilgrim,—saved by miracle.
Though I have found, I will not rob thy nest
Saving of thy sweet self; if thou thinkest well
To trust, fair Madeline, to no rude infidel.'

39

"Hark! 'tis an elfin-storm from faery-land,
Of haggard seeming, but a boon indeed:
Arise—arise! the morning is at hand;
The bloated wassaillers will never heed:-
Let us away, my love, with happy speed;
There are no ears to hear, or eyes to see,-
Drowsed all in Rhenish and the sleepy mead;
Awake, arise! my love, and fearless be,
For o'er the southern moors I have a home for thee."

40

She hurried at his words, beset with fears,
For there were sleeping dragons all around,
At glaring watch, perhaps, with ready spears—
Down the wide stairs a darkling way they found,—
In all the house was heard no human sound.
A chain-dropped lamp was flickering by each door;
The arras, rich with horsemen, hawk, and hound,
Fluttered in the besieging wind's uproar;
And the long carpets rose along the gusty floor.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



३८

"मधुरस्वप्नदृष्टा मदलीने ! हे मेरी सहचरि प्यारी !
कहो तुम्हारा क्रीतदास क्या कृपापात्र बन सकता हूं ?
हृदयाकार ढ़ाल बन सकता तव शोभा की क्या सिन्दूरी ?
मेरे धवल रजत मन्दिर हे ! तव ढिग मैं विश्रामलिप्सु हूं।
दैवी चमत्कार से रक्षित श्रान्त, क्लान्त तीर्थार्थी हूं
घण्टों बाद खोज के तेरी इतने घोर परिश्रम से।
नहीं लूटना नीड़ मुझे तव, यद्यपि सम्यक् वहां प्राप्त हूं
केवल तव मधु स्वत्व चाहिए, मुझपर कर विश्वास हृदय से
मैं हूं नहीं असभ्य, अधार्मिक सुन्दरि ! पूरित मैं श्रद्धा से।"

३९

"देखो परीदेश से आई यह आंधी जादुई अलौकिक,
है स्वरूप इसका भयकारक पर समझो वरदान इसे।
उठो ! उठो ! बेला आ पहुंची अति समीप प्रातःकालिक।
नहीं हमें खतरा है कोई मद्यसुप्त तव अतिथिवर्ग से।
प्राण ! यहां से चल हम भागें जितना सम्भव हो जल्दी से,
नहीं देख सकता है कोई, हमें न कोई सुन सकता
सभी पड़े हैं धुत्त तृप्त हो रीनिश[1] अरु निद्रालु मीड[2] से।
उठो, चलो हे प्राण ! झटिति तुम ले करके पूरी निर्भयता
तव स्वागतहित गृह अनुपम है दक्षिण कच्छों में खड़ा विहसता।"

[1] मद्य विशेष। [2] मद्य विशेष जिसमें मधु मिली रहती है।

४०

जल्दी जल्दी उठी शब्द सुन यद्यपि थी वह ग्रस्त भयों से
क्योंकि चारों ओर वहां थे निद्रागत बहु दैत्य भयंकर–
यह था भय वे हो सकते हैं आंख गड़ाये सज भालों से।
चौड़ी सीढ़ी के नीचे आ उनको मिला अन्धपथ सत्त्वर,
नहीं सुनाई था पड़ता उस घर में मानव शब्द रंचभर।
हर कपाट पर अर्गल–लम्बित टिम टिम करता दीपक मन्द।
अश्वारोही, श्येन, तथा आखेटश्वान से चित्रित रुचिकर
भित्तिच्छद[1] फड़फड़ा रहे थे पवनालोड़ित हो स्वच्छन्द
उड़ जाते थे दीर्घ गलीचे बाती[2] तल पर पा आस्कन्द[3]।।

[1] दीवालों पर ढकने वाले कपड़े। [2] वात (हवा) से भरा हुआ। [3] थपेड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



41

They glide like phantoms, into the wide hall;
Like phantoms to the iron porch, they glide;
Where lay the Porter, in uneasy sprawl,
With a huge empty flaggon by his side:
A wakeful blood-hound rose, and shook his hide,
But his sagacious eyes an inmate owns:
By one and one, the bolts full easy slide:-
The chains lie silent on the footworn stones;
The key turns, and the door upon its hinges groans.

42

And they are gone: aye, ages long ago
These lovers fled away into the storm.
That night the baron dreamt of many a woe,
And all his warrior-guests, with shade and form
Of witch and demon, and large coffin worm,
Were long be-nightmared. Angela the old
Died palsy-twitched, with meagre face deform;
The Beadsman, after thousand aves told,
For aye unsought-for slept among his ashes cold.

Composed between 18 January and 2 February 1819)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



४१

सरक चले वे प्रेततुल्य उस घर के विस्तृत महागार में
प्रेततुल्य वे पहुंच गये अभिसर्पण कर लौह प्रतोली पर
सोया पड़ा द्वाररक्षक था जहां अजीब परिस्थिति में।
मदिराकुम्भ पड़ा खाली था उसके ढिग अति दीर्घ लुढ़ककर।
रक्तश्वान उठ बैठा जगता, आया बाहर निलय त्यागकर
किन्तु एक अन्तःवासी को कुशलनयन पहचान गया।
हटे गजबरन सिंहद्वार से सहज रूप से एक एककर
और दलित प्रस्तरदल पर जा जंजीरों ने शरण लिया;
चाभी घूमी और द्वार ने कब्जों पर था निज नाद किया।।

४२

और विलीन हुए वे दोनों अरे अनेकों सदियों पहले
अन्तर्धान हुए प्रेमी वे दूर बहुत चल उस आंधी में।
पड़े दिखाई क्षत्रप को थे उसी रात में सपने दुःख ले;
फैलाया संत्रास संकलित उसके उस योद्धासमूह में
यातुधान, डाकिनी, तथा ताबूती कृमिदल ने स्वप्नों में
धारण करके रूप अनेकों और विविध छायाओं से।
मृत्युप्राप्त हो गई ऐन्जिला होकर बक्रकाय लकवा में,
जपकर्ता ऋत्विक् जा सोया ढंक निज को ठण्डी राखों से
'जय मैरी' कर जाप सहस्त्रों हो अनपेक्षित सकल लोक से।।

रचना–काल : १८ जनवरी और २ फरवरी १८१६ के बीच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## 'Why did I laugh tonight?'

Why did I laugh tonight? No voice will tell:
No God, no Demon of severe response,
Deigns to reply from Heaven or from Hell.
Then to my human heart I turn at once—
Heart! thou and I are sad and alone;
Say, wherefore did I laugh! O mortal pain!
O Darkness! Darkness! ever must I moan,
To question Heaven and Hell and Heart in vain.
Why did I laugh? I know this being's lease
My fancy to its utmost blisses spreads;
Yet would I on this very midnight cease,
And the world's gaudy ensigns see in shreds.
Verse, Fame, and Beauty are intense indeed,
But Death intenser—Death is life's high meed.

Composed on 15 April 1819

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# आज रात मेरे हंसने का कारण क्या बतलाये कौन

(टिप्पणी : कीट्स की चतुष्पदियों में "ह्वाई डिड आई लाफ टुनाइट" शीर्षक चतुष्पदी की भी बड़ी ख्याति है; आलोचकों ने इसे बहुत सराहा है। इस कविता में मृत्यु को जीवन की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि के रूप में स्वीकारा गया है।)

आजरात मेरे हंसने का कारण क्या बतलाये कौन ?
कोई देव न कोई दानव, प्रत्युत्तर देने में दक्ष
उत्तर मुझको देने वाला? स्वर्ग–नरक दोनों हैं मौन !
हो निराश झटिति मैं उन्मुख होता मानव हिय के पक्ष।
हिय ! हम तुम – दोनों ही एकाकी और दुःखी हैं अतिशय।
बतलाओ मैं हंसा भला क्यों? आह कष्ट! मैं हूं अति दीन,
अरे अंधेरा ! घोर अंधेरा ! नित विलाप मेरा परिचय।
स्वर्ग, नरक, अरु हृदय – सभी से प्रश्न हमारा उत्तरहीन।
मैं क्यों हंसा? विदित है मुझको, मेरे जीवन की शर्त यही
प्राप्ति कल्पना को हो मेरी आत्यन्तिक आनन्दों की
किन्तु रुद्धजीवन मैं तो हो जाऊंगा अर्द्धरात्रि में आज रात ही
और करूंगा परिवीक्षा खण्डित भू के भड़कीले भगवों की।
कविता, यश, अरु सुन्दरता हैं निश्चय ही गम्भीर,
किन्तु अधिक गम्भीर मृत्यु है, जीवन की क्षतिपूर्ति सुधीर।।

रचना–काल : १५ अप्रैल १८१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## From Hyperion : A Fragment

Book I

Deep in the shady sadness of a vale
Far sunken from the healthy breath of morn,
Far from the fiery noon, and eve's one star,
Sat grey-haired saturn, quiet as a storm,
Still as the silence round about his lair;
Forest on forest hung above his head
Like cloud on cloud. No stir of air was there.
Not so much life as on a summer's day
Robs not one light seed from the feathered grass,
But where the dead leaf fell, there did it rest.
A stream went voiceless by, still deadened more
By reason of his fallen divinity
Spreading a shade: the Naiad 'mid her reeds
Pressed her cold finger closer to her lips.

LL. 1- 14

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ''हाईपीरियन'' (सर्ग एक से)

(टिप्पणी ः कीट्स ने मिल्टन के ''पैराडाइज़ लास्ट'' नामक महाकाव्य का अनुकरण करते हुए उसी उदात्त शैली में ''हाइपीरियन'' शीर्षक महाकाव्य लिखना शुरु कर दिया था किन्तु यह पूरा न हो सका। कवि ने इसीलिए अपने प्रस्तावित महाकाव्य को ''एक खण्ड या एक अंश'' कहा गया है। यहाँ इस महाकाव्य की एक झलक प्रथम सर्ग की प्रथम चौदह पंक्तियों के हिन्दी अनुवाद के माध्यम से दी गई है।)

''हाइपीरियन'' की कथा ग्रीक पुरावृत्त पर आधारित है। ग्रीक लागों का विश्वास था कि ओलिम्पस पर्वत पर रहने वाले ज्यूस आदि देवताओं ने, अपने पूर्वजों, जिन्हें 'टाइटन्स' कहते थे, को पदच्युत कर पूरे ब्रह्माण्ड पर अधिकार स्थापित किया था। टाइटंस और ओलम्पियन्स के बीच महा संग्राम हुआ था जिसमें सैटर्न के नायकत्व में टाइटन्स पराजित हुए थे। पराजित और पदच्युत सैटर्न के नैराश्य का वर्णन निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत है।)

बैठा था शनिदेव[1] दुःखों की छायावाली घाटी में
प्रातकाल की स्वस्थ श्वास से दूर बहुत जा गर्त–निमज्जित,
दूर बहुत जा प्रखर धूप से मध्य दिवस की,
और किनारे हट कर काफी सायं के एकल तारे से।
पलित केश थे सारे उसके, वह था पत्थर सा खामोश
निश्चल था ऐसे जैसे थी उसकी निज स्तब्ध गुहा।
लटक रहे थे सिरउपर उसके जंगल के ऊपर जंगल
जैसे हों बादल पर बादल; नहीं वायु में था कम्पन।
इतनी भी उसमें शक्ति नहीं थी जितनी होती गर्मी में
जब होती असमर्थ वायु वह लघुतम बीज छीन लेने में
पंख युक्त तृण के अन्तर से; वहीं पड़ी रह गई घास थी
जहाँ गिरी थी घाटी में; पास एक झरना बहता था
बिना शब्द उत्पन्न किए; और अधिक था मृतक बन गया
वह उस सुर के भ्रष्ट सुरत्ववश; उसकी छाया थी विस्तृत;
और जलपरी बेतसकुल में थी अधरों को मींज रही
अपनी ठंडी उंगली द्वारा पहले से ज्यादा तेज़ी से।। १–१४।।

१. टाइटन्स का नायक सैटर्न ही भारत में शनिदेव कहलाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## From Hyperion: A Fragment
Book II, ll 167-24

So ended Saturn; and the God of the Sea,
Sophist and sage from no Athenian grove,
But cogitation in his watery shades,
Arose, with locks not oozy, and began,
In murmurs which his first-endeavouring tongue
Caught infant-like from the far-foamed sands.
'O ye, whom wrath consumes! who, passion-stung,
Writhe at defeat, and nurse your agonies!
Shut up your senses, stifle up your ears,
My voice is not a bellows unto ire.
Yet listen, ye who will, whilst I bring proof
How ye, perforce, must be content to stoop;
And in the proof much comfort will I give,
If ye will take that comfort in its truth.
We fall by Course of Nature's law, not force
Of thunder, or of Jove. Great Saturn, thou
Hast sifted well the atom-universe;
But for the reason, that thou art the King,
And only blind from sheer supremacy,
One avenue was shaded from thine eyes,
Through which I wandered to eternal truth.
And first, as thou wast not the first of powers,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## हाईपीरियन सर्ग २ से

(टिप्पणी : "हाईपीरियन" नामक महाकाव्य लिखकर कदाचित् कवि कीट्स अपना सौन्दर्यशास्त्रीय दर्शन जनता के सामने प्रस्तुत करना चाहता था। यह दर्शन महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में समुद्र–देवता ओशियानस के वक्तव्य में प्रस्तुत किया गया है १६७ से २४३ पंक्तियों के बीच। इन्हीं पंक्तियों का हिन्दी पद्यानुवाद यहां प्रस्तुत है। ध्यातव्य है कि समुद्र–देवता ओशियानस भी पराजित टाइटन्स में से एक है; किन्तु जहां सैटर्नादि बहुत से टाइटन्स अपनी पराजय से उद्विग्न हैं वहीं ओशियानस "श्रीमद्भगवद्गीता" के स्थितप्रज्ञ व्यक्ति की भांति संसार के द्वन्द्वों से ऊपर उठ गया है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि कीट्स ने 'गीता' के दर्शन से विचार लेकर ही प्रकृत अंश का सृजन किया था। 'गीता' का अंग्रेजी में गद्यानुवाद चार्ल्स विलकिन्स ने १७८५ में लण्डन में ही प्रकाशित कराया था ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सौजन्य से।)

हुई समाप्त बात यों शनि की; और जलधिदेवता[1] जो,
नहीं साधु या चतुर प्रवक्ता था एथेंसी झुरमुट का
बल्कि विचार–प्रक्रिया था वह अपनी जलमय छायाओं की,
उठा और आरम्भ कर दिया उसने कलकल ध्वनियों में
जिसका चयन किया था उसकी प्रथमप्रयासा वाणी ने,
शिशु की भांति, दूर तक फैले फेनिल सिकताओं के चय से;
उसके केशपाश से कोई जलकण क्षरित कदापि नहीं था:
"सुनो जनो जो क्रोधयुक्त हो, रागदंश से ग्रस्त,
करते हो विलाप हार पर और विषादों को हो सेते!
कर दो बन्द इन्द्रिय–समूह को और मूंद लो कर्ण कुहर को;
मेरे स्वर धौंकनी नहीं हैं क्रोधाग्नि भड़काने वाली।
फिर भी मेरी बात सुनें वे जो सुनने के इच्छुक हों
क्योंकि मैं यह सिद्ध करूंगा कि तुम कैसे बलपूर्वक
हो जाओगे विवश प्रणति से रहने को सन्तुष्ट।
मेरा तर्क प्रदान करेगा तुम्हें बहुत ही राहत
यदि देखोगे उस राहत को तुम उसके सच्चे स्वरूप में।

[1] ओशियानस जो टाइटन्स के शासन–काल में समुद्र का देवता था। इस समय अन्य टाइटन्स की भांति वह भी पदच्युत है।

हुआ हमारा पतन बन्धुओ! है केवल प्राकृतिक नियम से,
नहीं कदापि रहा परिणति वह वज्रशक्ति की, या जुपिटर की[1]।
हे शनिदेव महान् ! सुनो है तुमने सम्यक् किया पृथक्
अणुस्वरूप ब्रह्माण्ड खण्डशः और बने तुम इसके ईश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



So art not the beginning nor the end.
From Chaos and parental Darkness came
Light, the first fruit of that intenstine broil,
That sullen ferment, which for wondrous ends
Was ripening in itself. The ripe hour came,
And with it light, and light, engendering
Upon its own producer, forthwith touched
The whole enormous matter into life.
Upon that very hour, our parentage,
The Heavens and the Earth, were manifest:
Then thou first born, and we the giant race,
Found ourselves ruling new and beauteous realms.
Now comes the pain of truth, to whom 'tis pain—
O folly! for to bear all naked truths,
And to envisage circumstance, all calm,
That is the top of sovereignty.

Mark well!
As Heaven and Earth are fairer, fairer far
Than Chaos and blank Darkness, though once chiefs;
And as we show beyond that Heaven and Earth
In form and shape compact and beautiful,
In will, in action free, companionship,
And thousand other signs of purer life;
So on our heels a fresh perfection treads,
A power more strong in beauty, born of us
And fated to excel us, as we pass
In glory that old Darkness: nor are we

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और अधीश्वर हो तुम चूंकि, हुए उसी मद से अन्धे;
एक मार्ग पर है ऐसा जो परवारित तेरी आंखों से;
उसी मार्ग से मैं पहुंचा हूं सत्य शाश्वत के घर तक।
और सुनो यह : चूंकि तुम थे नहीं प्रथम संप्रभुओं में,
न तो तुम हो आदि विश्व के और न तो तुम उसका अन्त।
मातृस्वरूपा अस्थिरता[2] अरु पिता सरीखे अन्धकार से
हुआ जन्म था उस प्रकाश का जो था सचमुच पहला फल
उस आमाशयीय क्षोभ का, उस विक्षुब्ध खमीरे का
जो अद्भुत उद्देश्यों के हित बना रहा था खुद का पाग।
पकने की घटिका जब आई, आया उसके साथ प्रकाश
और प्रकाश ने करके संगम अपनी ही जनयित्री से
छुआ झटिति विराट् तत्त्व को जिससे वह[3] था हुआ सजीव।
ठीक यही वह घड़ी थी जब कि हुए प्रकट धरती–आकाश[4]
जो थे हम सब दानवकुल के माता और जनयिता।
उसके बाद हुआ था उद्भव तेरा जो थे पहले पुत्र
और किया था नूतन एवं शोभावह परिक्षेत्रों पर
हम सब दानवकुल ने शासन बन करके अधिनायक उनका
और सत्य की पीड़ा आई अब हम लोगों के सम्मुख।
महामूर्ख है वह जो समझे इसको कोई पीड़ा क्योंकि
शान्त भाव से वीक्षित करना आई हुई परिस्थिति को
और सामना करना निर्भय सभी नग्न सच्चाई का
होता सचमुच चूड़ामणि है, हे बन्धो ! सम्प्रभुता का।।

[1] ज़्यूस, जोव या जुपिटर ओलम्पियन देवताओं का नायक। [2] क्यास। [3] भौतिक विराट तत्त्व। [4] यूरैनस एवं गी–टाइटन्स के माता–पिता।

सुनो ध्यान से : जैसे यद्यपि जो थे कभी विश्व के नायक
अस्थिर विकृति[1] एवं निविड अन्धकार[2] हैं जिनसे
कहीं अधिक सुन्दर वास्तव में धरती व आकाश
और यथा हम देते हैं दिखलाई पहुंचे हुए जनो !
कई तरह से धरती व आकाश से बढ़कर
रूप तथा आकृति में पूरे ठोस तथा अतिशोभन
इच्छा, कर्म तथा संगति में, और बहुत सी बातों में
हम सब[3] उनसे है बलवत्तर इसमें है सन्देह नहीं,
वैसे ही है पीछे आती हम सबके अब नव्य पूर्णता,
एक शक्ति जो सुन्दरता में है निश्चय हमसे बढ़कर।
हम लोगों की ही प्रसूति वह[4], भाग्यविहित है,
कर देगी अतिक्रान्त हमें, अब सुनो बात तुम मेरी यह :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



Thereby more conquered, than by us the rule
Of shapeless Chaos. Say, doth the dull soil
Quarrel with the proud forests it hath fed,
And feedeth still, more comely than itself?
Can it deny the chiefdom of green groves?
Or shall the tree be envious of the dove
Because it cooeth, and hath snowy wings
To wander wherewithal and find its joys?
We are such forest-trees, and our fair boughs
Have bred forth, not pale solitary doves,
But eagles golden-feathered, who do tower
Above us in their beauty, and must reign
In right thereof. For 'tis the eternal law
That first in beauty should be first in might.
Yea, by that law, another race may drive
Our conquerors to mourn as we do now.
Have ye beheld the young God of the Seas,
My dispossessor? Have ye seen his face?

Have ye beheld his chariot, foamed along
By noble winged creatures he hath made?
I saw him on the calmed waters scud,
With such a glow of beauty in his eyes,
That it enforced me to bid sad farewell
To all my empire: farewell sad I took,
And hither came, to see how dolorous fate
Had wrought upon ye; and how I might best
Give consolation in this woe extreme.
Receive the truth, and let it be your balm.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जैसे हम बढ़ गये शान में अपने बूढ़े अन्धकार से।
इसका अर्थ नहीं कि हम हैं उससे कहीं अधिक अभिभूत
जितना हुआ हमारे द्वारा शासन विकृत अस्थिरता का।
कहो तुम्हीं क्या झगड़ा करती जड़ मिट्टी उन्नत तरुओं से
जिनका किया भरण है उसने और अभी भी भाई !
करती है पालन वह उनका जो हैं अधिक सुघर उससे ?
क्या प्राधान्य हरे झुरमुट का है वह नहीं मानती, बोलो
अथवा क्या तरु डाह करेगा, कहो तुम्हीं, पारावत से
क्योंकि वह है कूजन करता और अलंकृत है पक्षों से
जो हैं हिमसम धवल तथा जिनके माध्यम से ही हरदम
वह उड़ता सर्वत्र स्वेच्छया अरु आनन्द मनाता है ?
हम तो ऐसे वन्य वृक्ष हैं जिनकी सुन्दर डालों ने
पोषित किया नहीं एकाकी रहने वाले पेडुकी दल को
बल्कि सुनहले पंखों वाले श्येनों को जो
हमसे आगे हैं शोभा में और इसी से
राज्य करेंगे वे सब प्यारे ! क्योंकि है यह नियम सनातन

[1] क्यास। [2] घोर अन्धकार। [3] टाइटन्स जिनके मां–बाप थेः अन्धेरा और विकृति (क्यास)।
[4] ज़्यूस आदि ओलिम्पस–वासी देवता।

'जो है पहला सुन्दरता में, पहला है वह बल में भी।'
अरे देखना इसी नियम से कोई जाति जन्म लेगी
और भगायेगी वह निश्चय हम लोगों के जेतृवर्ग को[1]
जो बिलखेगा वैसे ही जैसे हैं हम सब बिलख रहे।
देखा क्या तुमने है भाई ! नूतन सिन्धुदेवता को[2]
जिसने किया पदच्युत मुझको ? देखा क्या उसके मुखड़े को ?
क्या उसके रथ को देखा है जिसको फेनों के ऊपर
भव्य सपक्ष जन्तु खींचते जिनका उसने किया सृजन ?
देखा मैंने उसको स्थिर जल के ऊपर विचर रहे;
आंखों में उसके थी आभा ऐसी कि मैं हुआ विवश
कहने को अलविदा दुःखद उस अपने विस्तृत साम्राज्य को !
कह अलविदा चला मैं आया यहां बन्धु ! जानने को
कैसी रची भाग्य ने विपदा तुम लोगों के हेतु
और सान्त्वना देने के हित तुमको तेरे इस अतिदुःख में।
स्वागत करो सत्य का भाई, उसमें है विश्रान्ति।।

[1] विजेताओं अर्थात् ओलिम्पस–निवासी देवताओं को जिनका अधीश्वर ज़्यूस अथवा जुपिटर है। टाइटन्स की पराजय इन्हीं के द्वारा हुई थी। [2] नेपचून जो ओशियानस के स्थान पर समुद्रों का अधिपति बना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## La Belle Dame Sans Merci : A Ballad

1

O, What can ail thee, knight-at-arms
Alone and palely loitering?
The sedge has withered from the lake
And no birds sing.

2

O what can ail thee, knight -at-arms
So haggard and so woe-begone?
The squirrel's granary is full,
And the harvest's done.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# दयाहीन सुन्दरी

(टिप्पणी : अंग्रेजी कविता की एक विधा है 'बैलेड' जिसे हिन्दी में 'वीर काव्य' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। यह गीतकाव्य ('लिरिक पोइट्री') की ही एक विधा है जिसमें बड़ी सरल भाषा में प्रेम, वीरता, देशभक्ति आदि विषयों में से किसी एक विषय से सम्बद्ध कोई कहानी कही जाती है। 'बैलेड' के दो भेद हैं – एक है पारम्परिक बैलेड जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से (अनाम कवि द्वारा विरचित होकर) जन सामान्य में प्रचलित है और दूसरा है साहित्यिक बैलेड जिसे कवि व्यक्तिगत रूप से रचता है और यथासम्भव साहित्यिक बनाता है जिससे इसमें कृत्रिमता आ जाती है। कवि कोलरिज के दो बैलेड्स बहुत प्रसिद्ध हैं–"राइम ऑव एन्शण्ट मैरिनर" और "क्रिस्टाबेल"। कीट्स ने भी एक बहुत ही उत्कृष्ट बैलेड लिखा था जिसका शीर्षक है 'ल बेल दाम सँ मेक्षी जिसे 'दया–हीन सुन्दरी' नाम से यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। 'किस प्रकार एक योद्धा एक अति सुन्दरी परी के प्रति आकर्षित होता है और किस प्रकार वह उस परी द्वारा प्रेम में ठगा जाता है' यही इस कविता में वर्णित है। देखने में इतनी तुच्छ विषय वाली कविता प्रतीकात्मकता और अप्रस्तुतयोजना की दृष्टियों से कितनी समृद्ध है यह पाठक स्वयं सुनिश्चित करें किन्तु यह बात ध्यान देने योग्य है कि इसकी अनेक व्याख्याएं विद्वानों और समीक्षकों ने की हैं। अर्ल वासरमैन की व्याख्या सर्वाधिक गम्भीर ओर गूढ़ है।)

१

अरे कष्ट क्या तुम्हें बताओ शस्त्र–लसित रणधीर ?
क्यों हो विचर रहे एकाकी होकर इतने दीन ?
नागरमोथा सूख गई है देखो झील–तटों से
और दृश्य है पूर्णरूप से खग–कल–रव से हीन।।

२

अरे कष्ट क्या तुम्हें बताओ शस्त्रलसित रणधीर ?
क्यों हो क्लेशग्रस्त तुम इतने बहशी क्यों यह रूप ?
अन्नागार गिलहरी का है देखो अति समृद्ध
और कटाई पूर्ण हो चुकी निज ऋतु के अनुरूप।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



3

I see a lily on thy brow
With anguish moist and fever dew;
And on thy cheeks a fading rose
Fast withereth too.

4

I met a lady in the meads,
Full beautiful—a faery's child,
Her hair was long, her foot was light,
And her eyes were wild.

5

I made a garland for her head,
And bracelets too, and fragrant zone;
She looked at me as she did love,
And made sweet moan.

6

I set her on my pacing steed
And nothing else saw all day long;
For sidelong would she bend, and sing
A faery's song.

7

She found me roots of relish sweet,
And honey wild, and manna dew,
And sure in language strange she said-
'I love thee true.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



३

देख रहा हूं लिली तुम्हारी भौहों पर है गीली,
ज्वर–प्रस्वेद तथा आभ्यान्तर पीड़ा से हृतशान्ति।
गालों पर तेरे गुलाब मैं देख रहा हूं कुम्हलाता
जो तेजी से सूख रहा है खोकर सारी कान्ति।।

104004

४

हरी घास के मैदानों में मिली मुझे थी बाला एक
थी सर्वांगसुन्दरी वह तो – किसी परी की बच्ची।
केश दीर्घ थे किन्तु पदों की लघुता थी कमनीय
और नयन मतवाले उसके, मादकता ले सच्ची।।

५

उसके अलकों हेतु बनाई मैंने वेणी अनुपम,
बाजूबन्द तथा करधनिया भी सुरभित अति प्यारी।
देखा मुझको उसने जैसे उसे प्यार हो मुझसे
और मधुर सिसकी भी ली थी उस बाला ने न्यारी।।

६

तीव्रवेग निज हय पर मैंने उसको बिठा लिया था
और नहीं कुछ भी देखा था उस सम्पूर्ण दिवस भर,
क्योंकि अगल–बगल वह झुकती और गुनगुना देती थी
परियों का शुभ गीत मनोहर थोड़ी थोड़ी देसी पर।।

७

दिया मुझे उसने ला करके कन्दमूल सुस्वादु रुचिर
और बनैला शहद तथा देवों का प्रिय मधु मान्ना
और कहा उसने निश्चय ही अति अपूर्व किसी भाषा में
'करती तुमको प्यार, सुनो ना।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



8

She took me to her elfin grot,
And there she wept and sighed full sore
And there I shut her wild wild eyes
With kisses four.

9

And there she lulled me asleep
And there I dreamed— Ah! woe betide!
The latest dream I ever dreamed
On the cold hill side.

10

I saw pale kings and princes too,
Pale warriors, death-pale were they all;
They cried- 'La Belle Dame Sans Merci
Hath thee in thrall.'

11

I saw their starved lips in the gloam
With horrid warning gaped wide,
And I awoke and found me here,
On the cold hill's side.

12

And this is why I sojourn here
Alone and palely loitering,
Though the sedge has withered from the lake
And no birds sing.

Composed: 21 April 1819

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



८

मुझको लेकर पहुंची जा वह अपनी अद्‌भुत परी गुफा में
और वहां आहें भरकर वह रोई बाला जी भरके
और बावली मादक आंखें
मूंदी मैंने चार चुम्ब ले।।

९

और वहां पर मुझको उसने सुला दिया था लोरी गाकर
और वहां पर सपना देखा– हा हतभाग्य गया मैं मर!
सबसे ताजा सपना अपना
इस शीतल गिरि की द्रोणी पर।

१०

देखे मैंने पीतवदन राजा अरु राजकुमारों को
पीतवदन योद्धाओं को भी– थे वे सब मृतवत् पीले ।
वे चिल्लाये : 'दयाहीन मृगनयनी ने है
दास बनाया तुम्हें रंगीले ।'

११

देखा मैंने अन्धकार में उन लोगों के शुष्क अधर को
देते हुए प्रबोध भयावह ओष्ठों को आविवृत कर
और जगा मैं पाया निज को
इस ठण्डे गिरि की द्रोणी पर ।।

१२

यही हेतु है रुका यहाँ मैं
दुखी अकेला विचर रहा
यद्यपि झील–धास सब सूखी
और नहीं खग–गान रहा।।

रचना– काल : २१ अप्रैल १८१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## Ode to Psyche

O Goddess! hear these tuneless numbers, wrung
By sweet enforcement and remembrance dear,
And pardon that thy secrets should be sung
Even into thine own soft-conched ear:
Surely I dreamt to-day, or did I see
The winged Psyche with awakened eyes?
I wandered in a forest thoughtlessly,
And, on the sudden, fainting with surprise
Saw two fair creatures, couched side by side
In deepest grass, beneath the whispering roof
Of leaves and trembled blossoms, where there ran
A brooklet, scarce espied:
'Mid hushed, cool-rooted flowers, fragrant-eyed,
Blue, silver-white, and budded Tyrian,
They lay calm-breathing on the bedded grass;
Their arms embraced, and their pinions too;
Their lips touched not, but had not bade adieu,
As if disjoined by soft-handed slumber,
And ready still past kisses to outnumber
At tender eye-dawn of aurorean love:
The winged boy I knew;
But who wast thou, O happy, happy dove?
His psyche true!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# एक प्रगीत रति के नाम

(टिप्पणी : कीट्स की अंग्रेजी काव्य–जगत् में आज जो इतनी प्रसिद्धि है बहुत सीमा तक वह उसके प्रगीतों (ओड्स) के कारण है। वास्तव में ये प्रगीत कवि की सर्वाधिक महत्त्वर्पूण उपलब्धि हैं। उन्हें उसके काव्य का चूड़ामणि कहा जा सकता है। प्रस्तुत प्रगीत में ग्रीक पुरावृत्त और पश्चाद्वर्ती यारोपीय साहित्य में बहु–चर्चित आख्यान काम ('एरास या क्यूपिड') और रति ('साइके अथवा आत्मा') के प्रेम का उल्लेख करते हुए कवि ने अपनी काव्य–सम्बन्धी भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला है।)

सुनो देवि ! बेसुर गीतों को बिंधे हुये हैं जो मेरी
मधुर विवशता एवं प्यारी यादगार से
और करो तुम क्षमा मुझे यदि गाऊँ भेद की बातें तेरी
तेरे अपने कानों तक में मिलते हैं जो मृदुल शंख से ।
निश्चय आज स्वप्न देखा था मैंने या कि हुआ दर्शन
पक्षयुक्त मानस देवी की, उन्मीलित अक्षों के द्वारा ?
बिना किसी विचार–ध्यान के वन में मैं था विचर रहा
जब सहसा मैं चकित हो उठा मनहर प्राणि–युग्म द्वारा :
दोंनों प्राणी परिराजित थे अगल बगल गहरी धासों में
उनके ऊपर व्याकुल छत थी पत्रों एवं चल पुष्पों की;
पास एक झरना बहता था; वे थे इतर–दृष्टिपरिवारित ।
स्तब्ध, शीतजड़, गन्धनयन, नीले पुष्पों की अवली में
रजतघवल, बैजनी कली वाले सुमनों की गोदी में
शान्त– श्वसित वे पड़े हुए थे, तृण की सुन्दर शय्या– शोभित।
आलिंगित थे कर उनके अरु वैसा ही था पंखों का दल;
नहीं किया था अधरों ने स्पर्श किन्तु था कहा नहीं अलविदा उन्होंने ;
मानो थे कर दिये पृथक् वे कोमल कर निद्रा द्वारा
और प्रदत्त चुम्बनों से भी अधिक चुम्बनों हेतु समुद्यत
प्रातःकालिक प्रणयकार्य की कोमल नयन–उषा पर हों।
मैं परिचित था पूर्णरूप से पक्षयुक्त उस बालक से
किन्तु कौन थी तू बोलो हे, प्यारी–प्यारी पारावत![1]
उसकी सच्ची मनसा क्या ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



2

O latest born and loveliest vision far
Of all Olympus' faded hierarchy!
Fairer than Phoebe's sapphire regioned star,
Or Vesper, amorous glow-worm of the sky;
Fairer than these, though temple thou hast none,
Nor altar heaped with flowers;
Nor virgin-choir to make delicious moan
Upon the midnight hours;
No voice, no lute, no pipe, no incense sweet
From chain-swung censer teeming;
No shrine, no grove, no oracle, no heat
Of pale-mouthed prophet dreaming.

3

O brightest! though too late for antique vows,
Too, late for the fond believing lyre,
When holy were the haunted forest boughs,
Holy the air, the water, and the fire,
Yet even in these days so far retired
From happy pieties, thy lucent fans,
Fluttering among the faint Olympians,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



२

ओलिम्पस[२] गिरि की धूमिल[३] पूरी वंशक्रमणिका की
अधुनातन सन्तति! सुन हे, सुन्दरतम संदर्शन वाली !
उस तारे से तुम सुन्दर हो रहता जो है फीव[४] देवि की
नीलमवत् जाज्वल्य परिधि में अथवा हो शोभा वाली
वेस्पर[५] से भी अधिक, दमकता जो बन खेचर कामी खद्योत।
सुन्दरतर इनसे तुम हो, है यद्यपि मन्दिर नहीं तुम्हारा कोई
और नहीं वेदी है कोई फूलों की अवली–समलङ्कृत,
नहीं कुमारी गण गाती हैं सुमधुर गीत निशीथ काल में,
नहीं तुम्हारे हेतु कंठ है अथवा वीणा या वंशी,
नहीं धूपदानी से तव हित उठता मधुर हव्य धूम है,
नहीं तुम्हारे लिए देवि! है कोई झुरमुट/देवस्थान
और न कोई वक्ता तेरा और न कोई संदर्शी
पीतवदन गर्मी से स्वेदित स्वप्न निरत निशिवासर।।

१. साइके को कुछ कवियों और कलाकारों ने 'डव' (पारावत या पेडुकी) के रूप में चित्रित किया गया है; कीट्स ने उसी परम्परा में उसे 'पारावत' कहा है।
२. ग्रीस देश में स्थित एक पर्वत जो वहाँ की मान्यताओं के अनुसार देवताओं का वास–स्थान है ठीक वैसे ही जैसे हिन्दुओं के विश्वास के अनुसार कैलाश पर्वत शिव और अन्य देवताओं की भूमि है।
३. देवताओं का वंश धूमिल इसलिए कहा गया है कि आधुनिक बुद्धिवाद और विकासवाद के कारण लोगों की उनके प्रति श्रद्धा न के बराबर है।
४. चन्द्रमा की अधिष्ठात्री देवी।
५. सायं काल चमकने वाला वीनस नामक ग्रह–शुक्र।

३

सबसे तीक्ष्ण प्रकाशमयी हे! यद्यपि अब है चलन नहीं
सनातनी उन मनौतियों का और सरल श्रद्धा तंत्री का
जो प्रचलित थीं जब वन की डालें होती थीं देवता–निवास,
जब जल, अग्नि और समीर थे सबके सब पूरे पावन,
फिर भी जब यह दूर हो गया है युग पुण्य क्रियाओं से
मुझे दिखाई स्पष्ट पड़ रही ध्वनि तेरे मधु पंखों की
जो हैं फड़फड़ ध्वनि कर रहे क्षीणकाय ओलिम्पस गिरि पर;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


I see, and sing, by my own eyes inspired.
So let me be thy choir, and make a moan
Upon the midnight hours;
Thy voice, thy lute, thy pipe, thy incense sweet
From swinged censer teeming..
Thy shrine, thy grove, thy oracle, thy heat
Of pale mouthed prophet dreaming.

4

Yes, I will be thy priest, and build a fane
In some untrodden region of my mind,
Where branched thoughts, new grown with pleasant pain,
Instead of pines shall murmur in the wind:
Far, far around shall those dark-clustered trees
Fledge the wild-ridged mountains steep by steep;
And there by zephyrs, streams, and birds, and bees,
The moss-lain Dryads shall be lulled to sleep;
And in the midst of this wide quietness
A rosy sanctuary will I dress
With the wreathed trellis of a working brain,,
With buds, and bells, and stars without a name,
With all the gardener Fancy e' er could feign,
Who breeding flowers, will never breed the same
And there shall be for thee all soft delight
That shadowy thought can win,
A bright torch, and a casement open at night,
To let thy warm love in!

Composed on 21 April 1819

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गीत गा रहा उन्हें देख मैं अपनी ही प्रेरित आखों से[1]।
देवि! बनू मैं तेरा गायक और मुझे तुम दो वरदान
करूँ प्रलाप निशीथकाल में और बनूं मैं तेरा स्वर,
तेरी वीणा, तेरी वंशी और सुगन्धित हवि की धूम
तेरे दोलित धूपदान की, और तुम्हारा देवालय,
तेरा झुरमुट तेरा वक्ता और तुम्हारी ऊष्मा भी
छाई पीत वदन पर तेरे स्वप्नशील संदर्शी की।

१. कवि किसी अन्य के प्रभाव में आकर रचना नहीं करना चाहता; वह अपनी निजी उद्‌भावनाओं ओर विचारों को महत्त्व देना चाहता है, मौलिक बनना चाहता है।

## ४

बन जाऊँगा ऋत्विक् तेरा और बनाऊँगा देवालय
तेरे लिए हृदय के भीतर देवि! किसी अगमित प्रदेश में
जहाँ करेगें फड़फड़ हर पल शाखायित मेरे विचारदल
पाइन तरुओं की जगह हवा में सुखवह पीडा–नवप्रसूत हो;
चारों ओर करेंगे वलयित सघन वृक्ष के वे झुरमुट
गहरी उपत्यकासे मण्डित पर्वत–दल की हर ढ़लान को
और सुला देवेंगे झरने, विहग, भ्रमर पश्चिमी पवन
उस मानसी वन्य देश में शैवाली वन–परियों को।
इस विस्तृत एकान्त प्रान्त में रच दूँगा गुलाब की बाड़ी
जिसे सजाऊँगा मालायित मनोभूत जालकदल से,
कलियों से, घन्टीचय से व नामविहीन सितारों से–
उन सारी चीजों से जिनको है रचता कल्पना–माली।
वह जन्माता फूलों को जो होते नहीं कदापि एक से;
और तुम्हारे लिए वहाँ पर होगा सकल मसृण आनन्द
जिसे प्राप्त करने में सक्षम होगा छाया–शील विचार,
एक तेज उल्का एवं इक रात में खुलने वाली खिड़की
जिससे होकर भीतर आए तेरा आतुर प्रियतम![1]

रचना कान : २१ अप्रैल १८१६

१. साइके ('रति') का प्रेमी अर्थात् 'एरास', 'क्यूपिड' या कामदेव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# Ode to a Nightingale

1

My heart aches and a drowsy numbness pains,
My sense, as thcugh of hemlock I had drunk,
Or emptied some dull opiate to the drains
One minute past and Lethe-wards had sunk.
'Tis not through envy of thy happy lot,
But being too happy in thine happiness
That thou, light-winged Dryad of the trees,
In some melodious plot
Of beechen green, and shadows numberless
Singest of summer in full-throated ease.

2

O, for a draught of vintage! that hath been
Cooled a long age in the deep-delved earth,
Tasting of Flora and the Country green,
Dance, and Provencal song, and sunburnt mirth!
O for a beaker, full of the warm South,
Full of the true, the blushful Hippocrene
With beaded bubbles winking at the brim

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# प्रगीत एक बुलबुल के नाम

(टिप्पणी : कीट्स के प्रगीतों का सिरमौर है वह प्रगीत जिसकी रचना उसने अपने मित्र चार्ल्स ब्राउन के घर पर एक सुबह एक नाइटिंगेल (बुलबुल) के गीत से मुग्ध होकर की थी। कविता अपने भाव, प्रतीक एवं अप्रस्तुत योजना एवं नाद–सौन्दर्य के लिए बहुत प्रसिद्ध है; उसे रोमांसवादी कविता का चूडान्त निदर्शन कहना समीचीन होगा। इसकी अनेक व्याख्याएँ आलोचकों द्वारा प्रस्तुत की गई हैं जो इसकी गम्भीरता और समृद्धि का प्रमाण हैं। कविता का संगीत तत्त्व तो निश्चय ही हृदयावर्जक है।)

१

उर मेरा वेदनाग्रस्त है और चेतना पीड़ित मेरी
तन्द्राशील शून्यता द्वारा मानों मैंने पी ली कोई
कालकूट की शीशी अथवा निद्रा की जड़ बूटी पूरी,
किंचित् पल पहले अरु फलतः लीथी–नद[1] में स्थिति पाई।
इसका कारण नहीं कि मैं जलता हूँ तेरे सुखद भाग्य से
अपितु सुखातिशय्य वह जिसका अनुभव करता तव समृद्धि में
तू जो करती मुक्त कण्ठ से गान निरन्तर मधुरमास का
हे वन–परी तरल पंखों की! गाती हो जो पंचम सुर से
मधुर रागिनी से संप्लावित किसी क्षेत्र में
जो है हरित बीच वृक्षों से और धनी है छायाओं का।।

१. ग्रीक पुरावृत्तों में वर्णित परलोक की नदी जिसके जल का पान कर मृतात्माएँ अपने लौकिक अनुभवों को भुला देती हैं; 'लीथी' शब्द का शाब्दिक अर्थ ही है 'विस्मृति'।

२

मिले घूँट यदि द्राक्षा–रस का पड़ा रहा जो युगों–युगों से
पृथवी के अन्तर में जिससे गुण पाया शीतलता का,
फ्लोरा[1] और ग्राम–सुषमा का मिलता स्वाद अलौकिक जिससे
धूप–जली मस्ती, नर्तन, प्रावांस[2] प्रान्त के गीतों का!
मिले चषक मुझको दक्षिण की[3] उष्ण सुरा से जो हो पूरित,
जिसमें भरा सलज औ' सच्चा हिपोक्रीन[4] है
जिसके प्रान्तर् पर शोभित हैं गुरियाकार बुलबुले फुदकते,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



And purple-stained mouth;
That I might drink, and leave the world unseen
And with thee fade away into the forest dim.

3

Fade far away, dissolve, and quite forget
What thou amongst the leaves hast never known:
The weariness, the fever, and the fret.
Here, where men sit and hear each other groan,
Where palsy shakes a few, sad, last, grey hairs,
Where youth grows pale, and spectre-thin and dies,
Where but to think is to be full of sorrow
And leaden-eyed despairs,
Where Beauty cannot keep her lustrous eyes
Or new Love pine at them beyond tomorrow.

4

Away! away! for I shall fly to thee,
Not charioted by Bacchus and his pards,
But on the viewless wings of Poesy,
Though the dull brain perplexes and retards.
Already with thee! tender is the night,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आनन जिसका नील वर्ण है कुछ रक्तायित[५]।
पी लेते उसको यदि पाते ओर हमारी इच्छा है
तज कर लोक अदृश्य रूप से तुम संग वन में खो जाते।

१. रोम के पुरावृत्तों में पुष्पों और लताओं की अधिष्ठात्री देवी
२. फ्रांस देश का एक प्रदेश जो मध्य युग में अपने प्रेम–काव्य के लिए प्रसिद्ध था।
३. भूमध्य सागर के तटों पर बसे देशों से आयातित अंगूर की शराब; ये सभी देश (जिनमें पुर्तगाल, स्पेन, ग्रीस, इटली आदि सम्मिलित हैं) इंगलैंड के दक्षिण में स्थित हैं।
४. ग्रीस देश में हेलिकान पर्वत का एक झरना जिसके जल को पीने वाला कवि हो जाता था, ऐसी मान्यता थी।
५. कीट्स ने शराब की बोतल का रंग 'पर्पिल' कहा है जो नीले और लाल रंगों के संयोग से बनता है।

## ३

खो जाऊँ चल दूर कहीं मैं, घुल जाऊँ अरु जाऊँ भूल,
वे सारी बातें, पत्तों में तुमने जिन्हें नहीं जाना:
दौड़–धूप का ज्वर, थकान, पीडाएँ बहुत, असंख्यों शूल,
यहाँ जहाँ हम बैठे सुनते एक दूसरे का कराहना,
जहाँ मार जाता है लकवा, अन्तिम, मलिन, पलित केशों को,
जहाँ जवानी कुम्हला जाती, प्रेत–प्रतनु होकर मर जाती[१]
जहाँ सोचने का मतलब है हो जाना आविष्ट शोक से
और बुलाना पथराई आखों वाले विषाद को,
जहाँ न भास्वर नयनों को सुन्दरता अक्षत रख पाती
और न कल के बाद जहाँ उन बिनु नव प्रेम तनिक तरसे।

१. यहाँ ध्यातव्य है कि जिस समय यह प्रगीत लिखा गया था, वह कीट्स के जीवन का बहुत ही विषादमय समय था– उसके छोटे भाई टाम कीट्स की मृत्यु राजयक्ष्मा से अभी हाल में ही हुई थी। इस पंक्ति में कवि के मस्तिष्क में पड़ी टाम कीट्स की क्षीण होती हुई शारीरिक दशा की अमिट छाप बड़े प्रबल रूप में व्यक्त हुई है।

## ४

दुर ! दूर ! क्योंकि आयेंगे,
नहीं यान चढ़, बैकस और तेंदुओं के[१]
अपितु काव्य के पंखों पर जो नहीं दिखेंगे
यद्यपि है जड़ बुद्धि मार्ग में बाधक इनके।
लो सत्त्वर तुम संग हो गया, रात्रि मदिर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


And haply the Queen-Moon is on her throne
Clustered around by all her starry fays,
But here there is no light,
Save what from heaven is with the breezes blown
Through verdurous glooms and mossy winding ways.

5

I cannot see what flowers are at my feet,
Nor what soft incense hangs upon the boughs.
But in embalmed darkness, guess each sweet
Wherewith the seasonable month endows
The grass, the thicket and the fruit-tree wild—
White hawthorn, and the pastoral eglantine,
Fast fading violets covered up in leaves,,
And mid-May's eldest child,
The coming musk-rose, full of dewy wine,
The murmurous haunt of flies on summer eves.

6

Darkling I listen; and for many a time
I have been half in love with easeful Death,
Called him soft names in many a mused rhyme,
To take into the air my quiet breath;
Now more than ever seems it rich to die
To cease upon the midnight with no pain,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और कदाचित् शशिरानी[2] है सिंहासनगत
परिवेष्ठित तारा–परियों से!
किन्तु यहाँ आलोक नहीं है
छोड़ उसे जो वायु–संग है नभ से आहत
शैवाली चंचल मार्गों के हरित तमों से।।

१. बैकस अथवा डायानिसस ग्रीस के पुरावृत्तों में वर्णित सुरा का देवता था जिसने असभ्य संसार को सुरा बनाने की शिक्षा देकर सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाया। उसने इजिप्ट से लेकर कश्मीर तक की विजय की थी। विजय–यात्राओं में उसके रथ को सिंह, शादूर्ल और तेंदुए खींचते थे। यहाँ 'बैकस का यान' कविता के द्वितीय पद्य में वर्णित सुरा के लिए प्रयुक्त हुआ है।
२. यहाँ कवि ग्रीक देवी 'डायना' की ओर संकेत कर रहा है जो चन्द्रमा की अधिष्ठात्री देवी थी।

५

देख नहीं सकता कैसे हैं फूल खिले मेरे कदमों पर
अथवा मसृण सुरभि कैसी है इन सब डालों पर सन्दोलित।
किन्तु बता हर मधु सकता हूँ वासित तम में अनुमानित कर,[1]
ऋत्वनुसार मास करता है जिसके माध्यम से सन्दानित
लता–गुल्म को, तृण–समूह को, वन्य विटप को:–
श्वेत पुष्प हाथार्न तथा इगलैण्टाइन नाम ग्राम्य सुमनस्
पत्रावृत वायलेट पुष्प जो क्षिप्र वेग से होता क्षीण;
प्रथम पुत्र बन हर्षित करता मध्य मई को
आने वाला मस्करोज़ जो शिशिर कणों से है मदिरालस
और ग्रीष्म की सन्ध्याओं में भ्रमरों का है नादित नीड़।

१. यह पद्य कीटस के प्रसिद्ध काव्य–गुण 'सेन्शुअसनेस' के लिए बहुत प्रसिद्ध है; इसमें कवि की तीव्र घ्राण शक्ति ध्वनित है।

६

तिमिरोन्मुख सुन रहा यहां मैं, और रहा हूं बहुत काल से
निर्वृतिदाता मृत्युदेव के अर्द्ध प्रेम में।
गाया पेशल यश उनका है मैंने काव्यपंक्तियों से
जिससे मेरी शान्त श्वांस को ले लें वे ऊपर नभ में।
किन्तु मधुरतर मुझको लगता पहले से मरना सम्प्रति
अर्द्धरात्रि में बिना कष्ट के हो जाना सहसा विस्पन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



While thou art pouring forth by soul abroad
In such an ecstasy!
Still wouldst thou sing, and I have ears in vain
To thy high requiem become a sod.

7

Thou wast not born for death, immortal Bird!
No hungry generations tread thee down;
The voice I hear this passing night was heard
In ancient days by emperor and clown;
Perhaps the self-same song that found a path
Through the sad heart of Ruth, when, sick for home
She stood in tears amid the alien corn;
The same that oft-times hath
Charmed magic casements, opening on the foam
Of perilous seas, in faery lands forlorn.

8

Forlorn! the very word in like a bell
To toll me back from thee to my sole self!
Adieu! the fancy cannot cheat so well
As she is famed to do, deceiving elf.
Adieu! Adieu! thy plaintive anthem fades
Past the near-meadows, over the still stream
Up the hill-side; and now't is buried deep
In the next valley-glades:
Was it a vision, or a waking dream?
Fled is that music:- Do I wake or sleep?

Composed in May 1819

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जब तू अपना उर उड़ेल बाहर रख देती
पाकर ऐसी उन्मद स्थिति।
फिर भी तू गाती जायेगी जब मैं इधर दीन श्रुतिमन्द
तृण बन व्यर्थ सुनूंगा तेरी महावन्दना तू जो गाती।।

७

अमर विहग ! था नहीं तुम्हारा जन्म मरण के लिए हुआ,
नहीं विभुक्षित सन्ततियां हैं करती कभी प्रपीड़ित तुझको।
क्षीयमाण इस विभावरी में मैंने जो सुर श्रवण किया,
पड़ा सुनाई वही आदि में था भूभृत् और निर्धन को।
सचमुच यही गीत था जिसने पाया था स्यात् स्थान
दुःखी हिया में रूथ[1] के जब वह खड़ी हुई थी परशस्य पर
आंखों में आंसू भर करके, निज गृह हेतु अधिक अनुरक्त।
वही, वही जिसने प्रायः है बन करके अभिचार महान्
मोह लिए जादुई झरोखे खुलते थे जो फेनों पर
महा भयंकर जलनिधियों के, परियों के द्वीपों में त्यक्त[2]।।

[1] 'बाइबिल' के 'ओल्ड टेस्टमेण्ट' की 'द बुक ऑव रूथ' की नायिका जो अपने पति की मृत्यु के बाद भी अपनी सास नओमी के साथ ही रही, अपने 'मोअबाइट कबीले वालों के पास नहीं गई और सास के देश बेथलहम में ही रही। वहां वह बोज़ नामक भूमिपति के खेतों में काम कर आजीविका अर्जित कर रही थी। बाइबिल में रूथ के संदर्भ में किसी नाइटिंगेल का वर्णन नहीं आया है; यह कवि की अपनी कल्पना है।[2] यहां मध्ययुगीन परी–गाथाओं में वर्णित उन कहानियों की ओर संकेत है जिनमें राजकुमारियों को जादूगर समुद्र में स्थित किलों में बन्दी बनाकर रखते थे।

८

'त्यक्त' शब्द ही वह घण्टा है जिसने निज अनुनादन से
वापस किया तुम्हारे जग से मेरे प्रति स्वत्व मेरा।
नमस्कार ! है नहीं प्रवंचित कर सकती उस खूबी से
जितनी है प्रख्यात कल्पना, हे वंचक अप्सरा !
नमस्कार ! नमस्कार ! है करुण गान तव होता मन्द
आगे बढ़ शाद्वल धरती से शान्त उत्स का कर संस्पर्श
गिरिवर की द्रोणी पर उड़ता वह लो देखो गीत हुआ
प्रतिवेशी घाटी में स्थित हो करके पूर्णतया बन्द।
था यह जाग्रत सपना कोई अथवा था यह अन्तर्दर्श ?
हुआ पलायित गीत बेचारा, मैं जागा हूं या सोया ?

(रचनाकाल : मई १८१९)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# Ode On a Grecian Urn

Thou still unravished bride of quietness
Thou foster-child of silence and slow time,
Sylvan historian, who canst thus express
A flowery tale more sweetly than our rhyme:
What leaf-fringed legend haunts about thy shape
Of deities or of mortals or of both,
In Tempe or the dales of Arcady?
What men or gods are these? What maidens loth?
What mad pursuit? What struggle to escape?
What pipes and timbrels? What wild ecstasy?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# प्रगीत : एक यवन कलश पर

(टिप्पणी ः टामस ब्रूस, जो एल्जिन इलाके के अर्ल (क्षत्रप), थे १७६६ से १८०२ तक कस्तुन्तूनिया में इंग्लैण्ड के राजदूत थे। उन्होंने अपने राजनीतिक प्रभाव का लाभ उठाते हुए ग्रीस की अति प्राचीन कलाकृतियों को खरीद लिया ३६ हजार पौण्ड में। ये कलाकृतियां १८१६ में इंगलैण्ड आ गईं और ब्रिटिश म्युज़ियम में स्थापित कर दी गईं। कीट्स ने उन्हें वहां देखा और एक प्रगीत प्रणीत कर दिया। इसमें कीट्स की सौन्दर्यशास्त्रीय विचार–धारा बड़े प्रभावशाली ढंग से व्यक्त है; पाठक इसकी पदशय्या और अप्रस्तुत–विधान से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे।)

शान्त भाव की वधू ! सुनो तू, अद्यावधि निरभुक्त रही जो,
पालित सन्तति नीरवता अरु मन्थर गति से चलित काल की,
वन–प्रान्तर–इतिहासवेत्री ! दे सकती है मधुतर स्वर जो
गाथा को जो पुष्पमयी है, तुलना में इस तुकबन्दी की।
कौन वृत्त अंचलित पत्र से छाया तेरी आकृति पर रे?
अमरों का या मनुजों का यह अथवा दोनों ही का है यह ?
टेम्पे[1] में यह घटित हुआ या आरकडी[2] की दरियों में?
कौन मनुज या देववृन्द ये? बालाओं में क्यों विराग यह?
कैसी दौड़ मची यह पागल? क्या संघर्ष पलायन का रे !
कैसी वेणु और दुन्दुभी? कैसी मस्ती आह्लादों में?

[1] ग्रीस में ओलिम्पस पर्वत और ओसा पर्वत के बीच स्थित एक बहुत गहरी उपत्यका जो अपनी प्राकृतिक सुषमा के लिए प्रसिद्ध रही है और सूर्यदेव अपोलो का क्रीड़ा–क्षेत्र भी थी। [2] ग्रीस का एक पहाड़ी क्षेत्र जो शिकारियों और गड़ेरियों के देवता पैन की क्रीड़ाभूमि माना जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



2

Heard melodies are sweet, but those unheard
Are sweeter, therefore, ye soft pipes, play on
Not to the sensual ear, but, more endeared,
Pipe to the spirit ditties of no tone;
Fair youth, beneath the trees, thou canst not leave
Thy song, nor ever can those trees be bare;
Bold lover, never, never canst thou kiss,
Thou winning near the goal-yet, do not grieve,
She cannot fade, though thou hast not thy bliss;
For ever wilt thou love, and she be fair.

3

Ah, happy, happy boughs! that cannot shed
Your leaves, nor ever bid the spring adieu,
And happy melodist, unwearied,
For ever piping songs for ever new;
More happy love! more happy, happy love!
For ever warm and still to be enjoyed,
For ever panting, and for ever young;
All breathing human passion far above,
That leaves a heart high sorrowful and cloyed
A burning forehead, and a parching tongue.

4

Who are these coming to the sacrifice?
To what green altar, O mysterious priest?
Lead'st thou that heifer lowing at the skies
And all her silken flanks with garlands drest?
What little town by river or sea-shore
Or mountain-built with peaceful citadel
Is emptied of this folk, this pious morn?
And little town, thy streets for evermore
Will silent be; and not a soul to tell
Why thou art desolate, can e'er return.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



२

होते मधुर सुने सुर, लेकिन अश्रुत होते हैं मधुतर
अस्तु बजो हे वेणु ! मृदुल तुम बिना किसी भी बाधा के
नहीं ऐन्द्रिक कर्णों के प्रति, वरन् गीति प्रति जो प्रियतर
क्योंकि हैं वे आत्मरूप अरु बिना किन्हीं भी नादों के।
सुनो सलोने युवक ! खड़ा जो तरुओं की छाया में तू !
छोड़ नहीं सकता गाना निज और न तो होंगे तरु खाली
नहीं साहसिक प्रणयिन् ! सुन तू कथमपि ले सकता है चुम्बन
यद्यपि गत सन्निकट लक्ष्य के, किन्तु दुःखी मत होवे तू
नहीं विवर्ण कभी होगी वह, भले अप्राप्य तुझे सुखसीमन्
प्रेम करेगा तू तो शाश्वत और रहेगी वह श्रीवाली।।

३

प्यारी प्यारी शाखाओ हे ! नहीं त्याग सकती हो जो
अपने पत्ते और, कभी भी मधु को विदा न कह सकती !
और हर्षमय वंशीवादक ! बिना थके गाते हो जो
वेणु बजाकर गीत, बुढ़ापा जिन्हें नहीं है छू सकती
अति हर्षित हे प्यारी बाले ! हे बाले ! हे हर्षित बाले !
नित्य प्यारमय और नित्य ही भोगयोग्य सुखसरित् नयी !
प्रतिपल हांफ रही हो जो तुम, प्रतिपल नवयौवन से पूर्ण
ऊपर उठ उस कामभाव से प्राणवान् जीवन वाले
जो जाता है छोड़ हृदय को अरुचिपूर्ण, अत्यन्त दुःखी
कर देता है जलन भाल में, जिह्वा को करके तृषापूर्ण।।

४

कौन लोग ये चले आ रहे बलि–निमित्त किस वेदी पर
जो कितनी है हरित बताओ हे ऋत्विक् अव्यक्त !
तू है खींच रहा बछिया को रंभा रही जो शिर ऊपर कर
जिसके दोनों कोमल पुट्ठे हैं मालाओं से समलंकृत।
कौन नगर वह छोटा सा जो लगा हुआ था सरिता से
अथवा था वह सिन्धु–कूल पर या गिरि पर शुभदुर्गलसित
हुआ रिक्त इस शुचि प्रभात में इन लोगों से पूर्णतया?
और सुनो लघु नगर ! तुम्हारी गलियां होंगी ध्वनियों से
सदा सर्वदा हीन बेचारी और न प्राणी कोई प्रतिगत
हो सकता बतलाने को यह क्यों हो तू उच्छिन्नहिया।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



5

O Attice shape! Fair attitude! with brede
Of marble men and maidens overwrought,
With forest branches and the trodden weed;
Thou, silent form, dost tease us out of thought
As doth eternity; cold Pastoral!
When old age shall this generation waste
Thou shall remain, in midst of other woe
Than ours, a friend to man, to whom thou say'st
'Beauty is truth, truth beauty,-that is all
Ye know on earth, and all ye need to know.'

Composed in May 1919

## Ode on Melancholy

No, no go not to Lethe, neither twist,
Wolf's -bane, tight-rooted, for its poisonous wine
Nor suffer thy pale forehead to be kissed
By nightshade, ruby grape of Proserpine;
Make not your rosary of yew-berries,
Nor let the beetle, nor the death-moth be
Your mournful Psyche, nor the downy owl
A partner in your sorrow's mysteries;
For shade to shade will come too drowsily,
And drown the wakeful anguish of the soul.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



५

ऐ अटिका की आकृति ! बोलो, ऐ सदृष्टि ! शिल्पवाली
जिसकी है मणिशिला अलंकृत नर–नारी के वृन्दों से
और आखचित जिस पर डालें, पदाक्रान्त कक्षों की अवली !
मूक मूर्ति ! तू हमें छेड़ती विरहित कर बुद्धिविचारों से
जैसी करती हमें नित्यता, सुन ऐ ठण्डी ग्राम्यकृती !
जब कर देगी नष्ट जरा इस पीढ़ी को कालान्तर में
तू होगी तब भी हतशेषा अन्य व्यथा के बीच
मानव की बन सखी जिसे तू बतलायेगी दुर्दिन में
"सुन्दरता है सत्य, सत्य ही सुन्दरता, बस यही मती
ज्ञात तुम्हें है और तुम्हारे लिये ज्ञेय भू–बीच"।।

रचनाकाल : मई १८१६

## विषाद पर लिखा प्रगीत

(कीट्स के सौन्दर्य–शास्त्रीय दर्शन को समझने के लिए प्रस्तुत कविता का अध्ययन लगभग अनिवार्य सा है। यह कविता सम्पूर्ण रोमांसवादी काव्य का सार भी है क्योंकि इसके अनुसार हर सच्ची सौन्दर्यशाली वस्तु में करुणा का पुट रहता है और हर सच्चे आनन्द में विषाद अन्तर्हित रहता है।)

जाओ नहीं कदापि निकट तुम लीथी[1]–नद के और न तोड़ो
सबलमूल तुम उल्फबेन[2] को उसके ज़हरीले शराब–हित
और न नाइटशेड[3] विचुम्बित होने दो तुम अपना भाल
नाइटशेड अरुण द्राक्षा है प्रासरपाइन[4] देवी की;
यू–फल[5] के मनकों से विरचित होने मत दो निज जप–माला;
होने मत दो टिड्डी को या भीषण टिड्डे को कदापि तुम
क्रन्दनशील मनस् अपना तुम और न होने दो सह–भागी
अपनी व्यथा–रहस्यों का तुम क्षुद्र उलूक को क्योंकि ऐसे तो
छाया पर छाया आयेगी पैदा करती गहरी नींद
और डुबोएगी विनिद्र दुश्चिन्ता को तेरी आत्मा की।।

[1] ग्रीक पुरा–वृत्त में परलोक की नदी जिसमें नहाकर मृतात्माएं भू–लोक के अनुभवों को भुला देती हैं। [2] एक विषैला पौधा जिसका दूसरा नाम 'एकोनाइट' है; इससे दवा बनती है। [3] यह भी एक विषैला पौधा है जिसके फल मकोय की तरह होते हैं; उन फलों का रंग बैजनी होता है। [4] यमलोक की देवी जिसे नाइटशेड चढ़ाया जाता था। [5] काले पत्तों वाला, नित्य हरा रहने वाला कोनधारी वृक्ष जो प्रायः कब्रगाहों पर उगाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



2

But when the melancholy fit shall fall
Sudden from heaven like a weeping cloud,
That fosters the droop-headed flowers all,
And hides the green hill in an April shroud,
Then glut thy sorrow on a morning rose,
Or on the rainbow of the salt sand-wave,
Or on the wealth of globed peonies;
Or if thy mistress some rich anger shows,
Imprison her soft hand, and let her rave,
And feed deep, deep upon her peerless eyes.

3

She dwells with Beauty-Beauty that must die;
And Joy, whose hand is ever at his lips.
Bidding adieu; and aching Pleasure nigh,
Turning to poison while the bee-moth sips.
Aye, in the very temple of Delight
Veiled melancholy has her sovran shrine,,
Though seen of none save him whose strenuous tongue
Can burst Joy's grape against his palate fine;
His soul shall taste the sadness of her might,
And be among her cloudy trophies hung.

Written in May 1819

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



२

किन्तु उदासी का दौरा जब आए तेरे ऊपर सहसा
स्वर्गलोक से, सुन हे भाई ! रोदन करता मेघ–समान
जो करता है लालन–पालन लटके शिर वाले फूलों का
और छिपाता हरित पहाड़ी को बसन्त के शव–पट से,
तुम तब भोगो निज विषाद को निरख गुलाब प्रातकालिक
अथवा निरख इन्द्रधनुष को उगे हुए मरु के सागर में
अथवा देख सम्पदा अनुपम ग्लोबनुमा गुलाबों की
अथवा यदि प्रेयसी तुम्हारी दर्शाती है गुस्सा प्यारा,
बना सखे ! बन्दी कर उसका और उसे चिल्लाने दो
और अप्रतिम उसके नयनों को पीओ प्यारे जी भर करके।

३

सुन्दरता के संग वह रहती–सुन्दरता जिसको मरना है
संग सदा उसका करता है मोद, रखा हाथ जिसका रहता
उसके अपने अधरोष्ठों पर, देता हुआ विदाई हर पल
और सन्निकट है वह सुख के, हर क्षण है जो पीड़ित रहता
और बनाता है विष मधु को, पान निरत होता जब भौंरा।
अरे खुशी के ही मन्दिर में रहती नित घूंघट डाले
वधू उदासी, क्योंकि उसथा स्थित वहीं गर्भगृह है
यद्यपि पड़ता नहीं दिखाई किसी व्यक्ति को भी वह भाई !
छोड़ उसे जिसकी है जिह्वा सक्षम पूर्ण फोड़ने में
अपनी सुन्दर रसना द्वारा परम मोद की मृदु द्राक्षा।
ऐसे जन की आत्मा पाती स्वाद उदासी की खिन्नता–शक्ति का
और स्थान पाता वह शाश्वत देवी के धूमिल जयचिन्हों में।।

(रचनाकाल : मई १८१६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## The Fall of Hyperion: A Dream

From Canto I

Fanatics have their dreams, wherewith they weave
A paradise for a sect, the savage too
From forth the loftiest fashion of his sleep
Guesses at Heaven; pity these have not
Traced upon vellum or wild Indian leaf
The shadows of melodious utterance.
But bare of laurel they live, dream, and die;
For Poesy alone can tell her dreams,
With the fine spell of words alone can save
Imagination from the sable charm
And dumb enchantment. Who alive can say
'Thou art no poet; may'st not tell thy dreams'?
Since every man whose soul is not a clod,
Hath visions, and would speak, if he had loved
And been well nurtured in his mother tongue.
Whether the dream now purposed to rehearse
Be poet's or fanatic's will be known
When this warm scribe my hand is in the grave.

(Written in July 1819)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हाइपीरियन का पतन : एक स्वप्न

(कीट्स की अन्तिम बड़ी किन्तु अपूर्ण कृति थी प्राचीन सूर्य देवता हाइपीरियन के पराजय पर फिर से शुरू किया गया एक महाकाव्य जिसका शीर्षक था 'हाइपीरियन का पतन : एक स्वप्न'। इस अपूर्ण महाकाव्य में कवि की प्रौढ़ काव्य-कला के दर्शन होते हैं क्योंकि इसमें कष्ट झेलने की महत्ता बड़े दार्शनिक ढ़ंग से व्यक्त की गई है। यहां इस महाकाव्य के प्रथम सर्ग की प्रथम १८ पंक्तियों का अनुवाद प्रस्तुत है जिसमें कवि ने अपनी काव्य-शक्ति में आत्म-विश्वास व्यक्त किया है।)

धर्मान्ध देखते है निज सपने जिनसे वे बुनते हैं
निज मत का इक स्वर्ग; उच्चतम निद्रा की संरचना से।
करता है अनुमान शबर[1] भी देव लोक का।
किन्तु अहह ! है नहीं उतारा इन लोगों ने आज तलक
चर्मपटल या भोजपत्र पर मधुर गिरा की छायाओं को।
कीर्ति बिना पाए वे जीते, स्वप्न देखते, मर जाते हैं।
कविता ही बस कर सकती है निज स्वप्नों को व्यक्त;
वही शब्द के मनु–वर्णों[2] से कर सकती कल्पना–सुरक्षा
काले जादू एवं गूंगे अभिचारों से।
कह सकता क्या प्राणी कोई : "कवि कोई तुम नहीं,
नहीं शक्ति है तुममें अपने स्वप्न व्यक्त करने की?"
हर मनुष्य वह आत्मा जिसकी नहीं मात्र ढ़ेला है,
रखता स्वान्तःदृष्टि जिसे वह दे सकता अभिव्यक्ति,
किया प्यार है यदि उस जन ने और रहा निज भाषा–पोषित।
जिस सपने को आख्यायित है करने का संलक्ष्य यहां
वह कवि का है या कि किसी धर्मान्ध व्यक्ति का,
हो जायेगा ज्ञात सुलेखक जब यह मेरा हाथ
पहुंच जायगा वसुधा की सूनी गोदी में।।

(रचनाकाल : जुलाई १८१६)

[1] असभ्य, जंगली एवं असंस्कृत व्यक्ति। [2] मंत्राक्षरों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## To Autumn

Season of mists and mellow fruitfulness;
Close bosom-friend of the maturing sun;
Conspiring with him how to load and bless
With fruit the vines that round the thatch-eves run;
To bend with apples the mossed Cottage trees
And fill all fruit with ripeness to the core,
To swell the gourd, and plump the hazel shells
With a sweet kernel; to set budding more,
And still more, later flowers for the bees
Until they think warm days will never cease
For summer has o'er-brimmed their clammy cells.

2

Who hath not seen thee oft amid thy store?
Sometimes whoever seeks abroad may find
Thee sitting careless on a granary floor,,
Thy hair soft-lifted by the winnowing wind;
Or on a half-reaped furrow sound asleep,
Drowsed with the fume of poppies; while thy hook
Spares the next swath and all its twined flowers
And sometimes like a gleaner thou dost keep
Steady thy leaden head across a brook,
Or by a cidar-press, with patient look,
Thou watchest the last oozings hour by hour.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# शरद् के प्रति

(टिप्पणीः कीट्स के 'हेलेनिज़्म' (यूनानीपन) को समझने के लिए प्रस्तुत प्रगीत का अध्ययन अनिवार्य है। प्रकृति के विभिन्न उपादानों को मूर्त रूप प्रदान करना पुराने यूनानी काव्य की विशेषता थी। उसी परम्परा में प्रस्तुत कविता में कीट्स ने शरद् ऋतु जैसी अमूर्त वस्तु को उसी की अपनी अवधि में होने वाले विभिन्न कार्य–व्यापारों में रत व्यक्तियों के रूप में चित्रित किया है। आधुनिक समीक्षकों की दृष्टि में यह कविता कीट्स की सर्वोतम कृति है।)

ऐ ऋतु पूर्ण कुहासों एवं पकी हुई फलवत्ता से
अति अभिन्न सन्मित्र सूर्य के, फसले हैं जिससे पकतीं,
उससे मिल षड्यंत्र बनाते फल द्वारा संवरे कैसे
द्राक्षालता छावनों के सब झुक जाँयें सेबों के द्वारा
पक जाँयें भीतर तक कैसे बगिया के सब फल न्यारे
कद्दू कैसे गदराये, अखरोट–कोष सब भर जायें
मीठे दानों से एवं कैसे कलिका दल सब प्यारे
अधिकाधिक खिलते जायें बन पुष्प विलम्बित जिन द्वारा
सोचें अलि हों पूर्ण प्रवंचित सुख का दिन यह सब सारा
होगा नहीं समाप्त; ग्रीष्म ने भर दी हैं मकरन्द–गुहायें।।

२

देखा नहीं तुझे किसने है बैठे निज भाण्डार–पार्श्व में?
घर से बाहर जो भी निकले पायेगा वह तुम्हें कदाचित्
बैठा हुआ मुक्त चिन्ता से अन्नागार भूमि भाग में,
धीरे से कुन्तल तेरे जब कर देता शुध–पवन प्रलम्बित
अथवा अर्द्धकटी सीता पर पड़ा हुआ प्रगाढ़ निद्रागत
बेसुध हो अहिफेन[1] वास से, जब देती है तेरी हंसिया
आगे वाली हरी घास को प्राणदान आबद्ध पुष्प–संग
और कभी तू संग्राहकवत् करता है शिर को दृढ़तागत
जो है होता लदा बोझ से, जब तुम करते पार कुनदिया[2]
बहुधा बैठा सीधुयंत्र[3] ढिग धैयपूर्ण नयनों से या
तू है करता जाँच आखिरी बूँदों की घण्टों के संग।।

१. अफीम २. छोटी नदी ('ब्रुक'–नाला)
३. 'सिडार' नामक शराब बनाने वाली मशीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## 3

Where are the songs of Spring? Aye, where are they?
Think not of them, thou hadst thy music too,
While barred clouds bloom the soft-dying day,
And touch the stubble-plains with rosy hue;
Then in a wailful choir the small gnats mourn
Among the river sallows, borne aloft
Or sinking as the light wind lives or dies;
And full-grown lambs loud bleat from hilly bourn;
Hedge-crickets sing; and now with treble soft
The red-breast whistles from a garden-croft
And gathering swallows twitter in the skies.
Composed on 19 Sept. 1819.

104001

## ३

कहाँ गये वे गीत बसन्ती? कहाँ गये? किसने देखा?
करो नहीं तुम उनकी चिन्ता; तेरे भी अपने संगीत।
धीरे से ढलते दिनकर को जब करती नन्दित घनलेखा
और गुलाबी रंग में रंगती कृष्टभूमि को बनकर मीत,
तब क्रन्दन करते लघु मच्छर शोकाकुल समूहगीत में
सरिता के बेतसकुंजों में, फेंके जाकर अति ऊपर
अथवा आ नीचे धरती पर मन्थर वायु यथा मरती–जीती है।
पूर्ण प्रकृष्ट मेमने करते में–में निज पार्वात्य क्षेत्र में;
झिल्ली हैं झंकार रहे अरु देखो अब निज स्वन तिगुना कर
ललमुनिया देती है सीटी घर वाली बगिया में रह कर
और संकुलित होकर नभ में सोहन अति कलरव करती है।

रचना–काल : १६ सितम्बर १८१६

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

| | Signature | Date |
|---|---|---|
| Accession | | 5-7-2000 |
| | | 7-8-2000 |
| | | 8.8.2000 |
| | | " |
| Typed | | 22-9-2000 |
| Filing | | 27-9-2000 |
| E.A.R | | 8.8.2000 |
| Any other | | |
| Checked | | 8.8.2000 |

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## SOME INVALUABLE TITLES ON LITERATURE IN ENGLISH

- **Feminism and Literature: New Points of View**
Ed. K.K. Sharma, D.Litt., Former Prof. of English, Univ. of Allahabad
1996 ISBN 81-86572-81-1 Rs. 400

- **Alienation in the Poetry of Matthew Arnold**
Shrawan K.Sharma, Ph.D., G.K. University, Hardwar
1996 ISBN 81-86572-83-X Rs.300

- **Melting Memories (A Collection of Poems)**
Asha Viswas, Ph.D., Reader in English, B.H.U., Varanasi
1996 ISBN 81-86572-85-6 Rs.120

- **The Poetry of Madan G.Gandhi: A New Metaphysical Voice**
Narinder K. Rattan, Ph.D., Reader, M.D. University, Rohtak
1996 ISBN 81-86572-84-8 Rs.360

- **Indian English Novelists: Some Points of View**
Harish Raizada, D.Litt., Former Professor 0f English, A.M.U., Aligarh
1996 ISBN 81-86572-86-4 Rs.360

- **A Beacon (A Collection of Poems)**
Narinder K. Rattan, Ph.D., Reader, M.D. University, Rohtak
1996 ISBN 81-86572-87-2 Rs.120

- **Beyond the Prism (A Collection of Poems)**
Narinder K. Rattan, Ph.D., Reader, M.D. University, Rohtak
1996 ISBN 81-86572-88-0 Rs.120

- **For Him, His (A Collection of Poems)**
Narinder K. Rattan, Ph.D., Reader, M.D. University, Rohtak
1996 ISBN 81-86572-89-9 Rs.120

- **Stray Petals (A Collection of Poems)**
Narinder K. Rattan, Ph.D., Reader, M.D. University, Rohtak
1996 ISBN 81-86572-90-2 Rs.120

- **Literature, Ideology, Theory: Essays in Criticism**
Bhagwat S. Goyal, Ph.D., Principal, S.D. College (Mureet Univ.)
(To bo release soon) ISBN 81-86572-91-o Rs.360

- **Bhabani Bhattacharya: Some Points of View**
Ed. K.K. Sharma, D.Litt., Former Prof. of English, Univ. of Allahabad
1995 ISBN 81-86572-80-5 Rs.240

- **Mapping the Shore: Exercises in Criticism**
Asha Viswas, Ph.D., Reader in English, B.H.U., Varanasi
1995 ISBN 81-86572-81-3 Rs.240

**K.K. Publications**
**3350, Peepal Mahadev, Hauz Quazi, Delhi--110 006**
**Telephone: 3266965 ; Fax: 3269343**